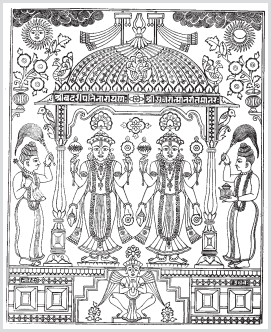

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ अंक : ६९ जनवरी-२०१३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	रंगमहोल में श्री घनश्याम महाराज	४
०४.	छपैया में घनश्याम महाराज का चमत्कार	६
०५.	जो वचनपाल है वह सुखी रहता है	७
०६.	प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी-न्युजीलेन्ड)	८
०७.	आज्ञांकित शार्दूल भगत	१०
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०९.	सत्संग बालवाटिका	१३
१०.	भक्ति सुधा	१५
११.	सत्संग समाचार	१८

॥ अस्मदीयम् ॥

गुजरात राज्य विधान सभा का निर्वाचन हुआ जिसमें भारतीय जनता पार्टी की विजय हुई। श्री नरेन्द्रभाई मोदीने पक्ष की विजय के बाद प्रजा के समक्ष कहा कि अब हम पांच वर्ष तक आप सभी के सभी प्रश्नों का समाधान करेंगे, जो भी समस्या है उसके विषय में चिन्तन करके निवारण करेंगे। हमें जलसा नही करना है। आप सभी के विश्वास को जीतना है । इसी तरह हमें भी ऐसी बहुमूल्य शरीर को प्राप्त करके जो शरीर भगवानकी कृपा से प्राप्त हुई है, उसे जलसा करके बर्बाद नहीं करना है। अपने अनेक जन्मों के पुण्य जब उदित हुये तब यह मनुष्य शरीर मिला है । उसमें भी ऐसे स्वामिनारायण संप्रदाय में भगवानने जन्म देकर प्रारब्धही बदल दिया। फिर भी जीव की यह कमजोरी कही जायेगी की इन सभी के बावजूद वह भगवान की भजन नहीं करता।

इतना सुंदर अलौकिक धनुर्मास चल रहा है। भगवान के भजन करने का श्रेष्ठ मास तथा श्रेष्ठ समय यही है। भगवानने हमें भक्ति करने के लिये बडी सुगमता की है। प्रातः जागकर स्नान पूजा करके नजदीक के अपने मंदिर में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून में आधा घंटा सतत नाम स्मरण करने का सुन्दर अवसर होता है। इस समय प्रातःकाल दूसरा कोई अन्य संकल्प नहीं, नहीं कोई नौकरी धंधे की झंझट ? खूब शान्ति से यह सम्भव। हाँ, केवल प्रातः जल्दी जागना कठिन है। लेकिन सत्संगी मात्र के लिये यह तो नियम होता ही है। इसलिये प्रिय भक्तों ! छोटे-बड़े मंदिरो में धुनका लाभ अवश्य लीजियेगा। सम्पूर्ण महीना इस तरह व्यतीत हो तो धर्म का बेलेन्स बढ जायेगा। इसलिये धनुर्मास में धून का लाभ लेकर सभी सत्संगी अपने जीवन को सार्थक बनावें।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसेम्बर-२०१२)

१२. नारायणपर (कच्छ) पदार्पण।

१४-१५. भचाउ(कच्छ) पदार्पण।

१६. कलोल के उत्तर गुजरात युवा सत्संग शिबिर में पधारे।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमराईवाडी वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९. थरा भाभरगाँव में (बनासकांठा) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१-२२. सुखपर (कच्छ) पदार्पण।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२४. बालवा गाँव में प.भ. जेशंगभाई लालजी चौधरी के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर मंदिर बोपल धुन प्रसंग पर पदार्पण, नारायणपर (कच्छ) पदार्पण।

२६. नारायणपर (कच्छ) पदार्पण।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२३) कथा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
कोचरब पालडी श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२८-२९. रामपर (कच्छ) पदार्पण।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट (प्रातः) तथा सायंकाल मोटेरा शाकोत्सव अपने हाथो से सम्पन्न किये।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसेम्बर-२०१२)

१. मुबारकपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

४. देलवाडा गामे शाकोत्सव पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

९. प.भ. संजयभाई आर. सोनी के शो-रुम पर पदार्पण, माणेकचोक।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा विजय स्थंभ स्थापन प्रसंग पर पदार्पण।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा पदार्पण।

२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

रंगमहोल में श्री घनश्याम महाराज

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

आदि आचार्य प्रवर प.पू.ध.धु. १००८ श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के पुत्र प.पू.ध.धु. १००८ श्री केशवप्रसादजी महाराज अपने पिताकी तरह समाधिनिष्ठ थे । वे समाधिअवस्था में रहकर सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान को अक्षरधाम में अनंत मुक्तों के साथ दर्शन करते थे । पुनः देह में आकर संत-हरिभक्तों से अक्षरधाम की श्रीहरि की मूर्ति का वर्णन करते । उस समय श्रीजी महाराज के समकालीन सभी संत अक्षरवासी हो चुके थे। इसलिये तत्कालीन संत कभी-कभी प.पू. केशवप्रसादजी महाराज के अक्षरधाम की मूर्ति के विषय में पूछते रहते । श्रीजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव तथा अन्य देव का स्वरुप यद्यपि श्रीहरि के थे फिर भी अक्षरधाम में अनंत मुक्तों से वेष्टित मूल स्वरुप का दर्शन-ध्यान करने की संतो को अत्यधिक जिज्ञासा होती । इसलिये प.पू. केशवप्रसादजी महाराजने अक्षरधाम में विराजमान श्रीहरि की प्रतिकृति (मूर्ति) बनवाने का विचार किया । यह जानकर संतो को खूब आनंद हुआ ।

सम्प्रदाय में सर्वप्रथम अक्षरधाम के सर्वोपरि परमात्माकी प्रतिकृति बनाने के लिये वडनगर के ख्यातनाम पवित्र लल्लुभाई शिल्पी मिस्त्री को प.पू. केशवप्रसादजी महाराजश्री ने बुलवाया और श्रीजी महाराज की मूलस्वरुप की अक्षरधाम को तद्रुप काष्ठ की मूर्ति बनाने की आज्ञा दी । वचनामृत में वर्णित चिन्हों का तथा अंग प्रत्येश का स्वरुप अक्षरधाम में विराजमान मूर्ति जैसा हो । मिस्त्री अपने ज्ञान के अनुसार कागज के ऊपर स्क्रेच करके वडनगर आया । प्रभु के उस स्वरुप का स्मरण करके अपने वर्कशोप में से सुन्दर काष्ठ लेकर अक्षरधाम में विराजमान सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की मूर्ति बनाना प्रारंभ किया ।

मूर्ति को आकार देते समय मन में द्विविधा उत्पन्न हो गयी । उस समय स्वयं प्रभु प्रगट होकर दर्शन देकर कहे कि मिस्त्री चिन्ता मत करो, मेरे प्रत्येक अंग का प्रमाण

स्वयं लेलो । तेज के पुत्र में विराजमान श्रीहरि के प्रत्येक अंग का मिस्त्रीने माप ले लिया । इसके बाद मूर्ति का स्वरुप देने लगा । ज्यौं ज्यौं मूर्ति का काम आगे बढने लगा त्यौं त्यौं आकृति स्पष्ट होती जा रही थी । जब जब द्विविधा में मिस्त्री हो, तब तब प्रभु दर्शन देकर समाधान करते । करीब छ महीने में यहा कार्य सम्पन्न हुआ तब तक मिस्त्री अपनी पत्नी या अन्य परिवार के सदस्यो के साथ कोई वात व्यवहार नहीं किया । इतना ही नहीं उसकी पत्नी मूर्ति की साधना में लगे अपने पति की सहायता में लगी रहती । साथ ही सामने जब होती तो भोजन की थाली परदे में रहकर दे देती ।

ब्रह्मचर्य व्रत के प्रताप से मूर्ति तो ऐसी बनी कि जैसे अक्षरधाम में से प्रत्यक्ष भगवान आकर खड़े हों ।

मूर्ति को अमदावाद मंदिर में लाने के लिये स्वयं प.पू. केशवप्रसादजी महाराज वडनगर गये । मूर्ति को देखकर बोले कि यह मूर्ति प्रत्यक्ष महाराज है । जैसा स्वरुप अक्षरधाम में है वैसा ही सांगोपांग यह स्वरुप है । प.पू. महाराजश्री मिस्त्री को अपनी पूजा में स्थित प्रसादी के श्रीहरि का चरणारविंद भेंट में दिया । उस समय से मिस्त्री जब भी प्रभु की याद करता स्वयं श्रीहरि प्रत्यक्ष दर्शन देते ।

श्री घनश्याम महाराज की काष्ठ की मूर्ति श्रीहरि के निवास स्थान रंग महल में एक बड़ी आलमारी में रखी गयी । आरती-भोग-पूजा होने लगी । पीतांबर घनश्याम महाराज का संत जब ध्यान करते तब यह मूर्ति तथा अक्षरधाम की मूर्ति एक हो जाती । कुछ समय तक यह प्रक्रिया चली । बाद में विक्रम संवत १९४२ कार्तिक शुक्ल-१२ को विधिपूर्वक आचार्य श्री केशवप्रसादजी महाराजश्रीने प्राणप्रतिष्ठा की । इसके बाद वस्त्रालंकार पहनाया जाने लगा ।

इस रंग महल में प्रतिष्ठित घनश्याम महाराजकी मूर्ति के आधार पर संप्रदाय के अन्य मंदिरो में प्रतिष्ठा की गयी । लेकिन रंगमहल के घनश्याम महाराजकी प्रतिलिपि आज तक कोई नहीं कर सका ।

''एवी त्रिभुवन मां नवदीठी रे, मूर्ति मरमाली''

किसी को भी अक्षरधाम में बिराजमान श्रीजी महाराज के स्वरुप का दर्शन करना हो तो रंग महल के घनश्याम महाराज का दर्शन करे । वर्षो से संत हरिभक्त मूर्ति के सामने बैठकर ध्यान करते रहते हैं । ध्यान करने का स्वरुप होने से यहाँ पर आरती तथा अन्य उत्सव नहीं किया जाता । मात्र चकोर पक्षी की तरह चन्द्रमा की तरफ देखने जैसा यहाँ का मुक्तवातावरण है ।

यह मूर्ति केशवप्रसादजी महाराज के साथ अनेकवार वात की है । प.पू.ध.धु. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज तो घन्टो तक मूर्ति के सामने बैठे ही रहते थे । वर्तमान आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पूजा में पटमूर्ति को रखकर ध्यान करते है ।

इस मूर्ति में संत तथा हरिभक्तों ने बहुत सारे चमत्कार देखे हैं । आज भी चमत्कार दिखाई देता रहता है । यह अनुभव का विषय है ।

घनश्याम महाराज के चमत्कार का दर्शन जिन-जिन भक्तों को हुआ है वह सब आगे के लेख में लेंगे ।

वडोदरा के सयाजीराव गायकवाडने अपने लिये ऐसी मूर्ति बनाने के लिये लल्लूभाई मिस्त्री को आज्ञा किया । परंतु मिस्त्रीने हाथ जोड़कर मनाकर दिया । अब मुझसे इस तरह की मूर्ति नहीं बनेगी । इस मूर्ति को १२८ वर्ष हो गया । मनुष्य के रुप में जैसे महाराज थे वैसा स्वरुप में अक्षरधाम में विराजमान है । याहाँ पर आज भी कीर्तन गाया जाता है । भद्रकाली के पास किसी भक्तने मोक्ष मांगा तो माताजी उसे अपने साथ लेकर रंगमहल के घनश्याम महाराज के पास लेआई और कही कि मोक्ष इनसे मांगो ।

मंदिरो में बिराजमान सभी स्वरुप श्रीजी महाराज के ही है । उसमें थोड़ा भी अंतर नहीं है । परंतु मूल स्वरुप की आकृति रंग महल के घनश्याम महाराज ही है । ध्यान के सच्चे पारखी संत-हरिभक्त रंग महल के घनश्याम महाराज का ही ध्यान करते हैं । परंतु कितने लोग अपने मंदिरो में अपनी आत्मबुद्धि से अलग अळग स्वरुपों का ध्यान करते हैं ।

घनश्याम महाराज की मूर्ति को जिस बाक्स में रखा गया था वह बाक्स आज श्री नरनारायणदेव के कोठार में है । जिस में भोग का प्रसाद रखा जाता है । इसीलिये प्रसाद की प्रसंशा होती है ।

छपैया में घनश्याम महाराज का चमत्कार

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री घनश्याम महाराज का जन्म स्थान है । जहाँ पर मंदिर का नव्य-भव्य विशाल मंदिर का निर्माण कार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से पिछले पांच वर्ष से सुंदर संगमर्मर पत्थर से शिल्प शास्त्र के अनुसार बनाया जा रहा है । महंत स्वामी ब्रह्मचारी वासुदेवानंदजी संत-हरिभक्तों के तन, मन, धन के सहयोग से मंदिर निर्माण कार्य में अथक परिश्रम कर रहे हैं । छपैयाधाम में दर्शन के लिए आने वाले सभी दर्शनार्थियों की यथासंभव सेवा कर रहे हैं । करीब १२ करोड़ के खर्च से तैयार होने वाला निर्माण कार्य ६०% प्रतिशत जितना हो चुका है । इस काम के शिल्पी भावेश तथा सुरेश सोमपुरा के शिल्पी गढाई का कार्य करते हुये फिटिंग करते जा रहे हैं । घनश्याम महाराज की मूर्ति यथावत रखकर मन्दिर का निर्माण कार्य हो रहा है।

घनश्याम महाराज बाल स्वरुप में प्रत्यक्ष विराजमान है । इसका चमत्कार दर्शन करने वाले हरिभक्तों को होता रहता है । जिस में विगत १० नवम्बर एकादशी को घनश्याम महाराजकी मूर्ति के सामने धर्मकुल की मूर्ति का शिल्पकाम करने वाले शिल्पी के पास एक भूरेबाल वाला ११ वर्षीय बालक सफेद वस्त्र धारण किये हुये मस्तक पर तिलक चन्दन किये हुये वहाँ आता है और पका हुआ सुगन्धित दो आम देकर वहाँ से नीचे उतर जाता है । थोड़े समय के बाद उस शिल्पी को विचार आता है कि बिना सीजन के आम्रफल देने वाला कौन हो सकता है ? उसके पीछे-पीछे वह शिल्पी दौड़कर बुलाने जाता है इतने में वह बालक जन्म स्थान के भुइधरा में देखते-देखते अदृश्य हो जाता है । इस वात पर अधिक विचार करने का समय घनश्याम महाराज ने नही दिया । विचारों के ऊपर माया का आचरण डाल दिया । इस आम्रफल को शिल्पी खाया नही, जब चार बजा मंदिर खुला तो भगवान को भोग लगवाकर प्रसाद के रुप में महंत स्वामी के पास ले गया । महंत स्वामी विना सीजन का इतना सुंदर फल देखकर बड़े आश्चर्य के साथ मिलने का कारण पूछे । वह शिल्पी आनन्दित होकर उस घटित घटना को आनूपूर्विक वर्णन कर दिया । भगवान उसकी शिल्पकला पर प्रसन्न होकर आम का फल दिये थे । आम का फल तो प्रसाद के रुप में बांट दिया गया लेकिन उसकी बीया (गुठली) आज भी वहाँ रखी हुई है । वह आम्रफल किस बगीचे का था ? किसने दिया था ? यह सब छपैया के घनश्याम महाराज जाने । लेकिन ४-५ वर्ष से मूर्तियों के शिल्पकला का काम करने वाले शिल्पियों पर धर्मकुल की मूर्ति बनाते समय प्रसन्न हुये थे जिस से आम्रफल उन्हे प्रसाद के रुप में मिला था । इस तरह के चमत्कार को करीब ५०० जितने भक्तों ने देखा है । ऐसा वर्णन करने वाले हरिभक्त के मुख से सुनकर शरीर में रोमांच हो उठता है । घनश्याम महाराज जन्म स्थान में प्रत्यक्ष विराजमान है । उन सभी चमत्कारों में यह चमत्कार जुड़ गया । इस तरह के चमत्कार के विना कोई महीना खाली नही जाता । इस तरह की वात छपैयाधाम के महंत वासुदेवानंद स्वामीने बताई है ।

जो वचनपाल है वह सुखी रहता है

- साधु हरिकृष्णदासजी (एप्रोच-बापूनगर)

एकबार मुक्तानंद स्वामीने कहा कि आप तो साक्षात् परमेश्वर हैं। आप अपने भक्तों के लिये ही प्रगट हुये हैं । श्री रामानंद स्वामीने जिस तरह भक्तों का कल्याण करने के लिये आप से कहा है वैसा ही करें। गुरु रामानंद स्वामी के विचारो से आप परचित हैं। वे जैसी आपको प्रेरणा दे वैसा हम लोग करेंगे । आप गुरु रामानंद स्वामी के स्थान पर है। आप हमारे स्वामी है। आपजैसी आज्ञा करेंगे वैसा ही हम करेंगे। आपका वचन सर्वोपरि रखेंगे । आप जैसे रखेंगे वैसे हम रहेंगे । हम अपनी शरीर भी आपको समर्पित करते हैं। ''जो वचन पालता है वह सुखी रहता है।''

आपको जो वचन दिये हैं उसमें लेश मात्र भी अन्तर नहीं होगा। आपकी आज्ञा हमारे लिये सब कुछ है। हमारी शरीर-आत्मा आप ही है। हम जो कुछ देखते हैं - विचारते हैं वह हमारा नहीं है - वह सब आपका है। जिसे हम अपना कहते हैं वह सब माया का बन्धन है। अहंकार तथा समर्पण दोनो एक साथ नही रह सकता । अब समर्पित होकर आपकी आज्ञा में रहना है। दूसरी वात यह भी कि अहंकारी लोग प्रायः दुःखी होते है। यह आपभी कहते हैं। जो आपकी आज्ञा विना माने आगे गये हैं वे सभी दुःखी हुये हैं । सीता-लक्ष्मण जैसे भक्त भी भगवान का वचन भंग करके दुःखी हुये है। शिव-ब्रह्मा, इन्द्रादिक देवता तथा नारद ऋषि भी आप का वचन नहीं मानने से दुःखी हुये हैं। आप हमें अपनी दृष्टि देकर जील के दोष को दिखाया है। यद्यपि स्वयं के दोष को जीव कभी नहीं देखपाता है। वह स्वयं को निर्दोष मानता है।

''जो मान का परित्याग करता है वह मुक्त हो जाता है।''

जो मनुष्य अहंकार के कारण स्वेच्छाचारी होकर कार्य करता है उसका पतन होता है। जो ईश्वर की इच्छा (वचन) मानकर वर्तन करता है वह निर्दोष होता है, उसका उत्थान होता है। मुक्तानंद स्वामी का वचन सुनकर श्रीहरिने कहा, साक्षात् लक्ष्मीजी जो गुण प्राप्त करना चाहती है वह गुण आप प्राप्त कर चुके है। जब तक मनुष्य अहंभाव के साथ कार्य करता है तब तक उसका मोक्ष नहीं होता, वह बार-बार इस संसार में गिरता रहता है। जब वह परमेश्वर के वचन प्रमाण अनुसार चलता है। तब धीरे-धीरे उसके दोष निकल जाते हैं और सद्गुण आजाते हैं जब परमेश्वर के गुण आजाते है तब वह महान प्रतापी हो जाता है। संसार के विषय पदार्थ सभी विष जैसे प्रतीत होने लगते है। वह संसार में रहकर देह का मात्र निर्वाह करता है। ईश्वर के सिवाय वह कुछ नहीं मानता। वही परमात्मा का सच्चा भक्त कहा जाता है। आपको परमेश्वर का यथार्थज्ञान हुआ है, इसलिये आप ईश्वर के कृपापात्र है। यह समझ थोड़े पुण्य से समझ में नहीं आती।

''खप होय तेटलुं अगं वृद्धि पामे''

सभी लोग एक समान सत्संग करते है, लेकिन जिसकी जितनी चाहना होती है वह उतना ही प्राप्त करता है। इस समय जो मुमुक्षु मेरे साथ रहते हैं उन सभी के दोष को दूर करके शुद्ध करना है। जिससे पुनः उन्हें माया का दोष न लगे। वे अशुद्ध हो सके। हमारा यही सिद्धांत है। हम इसीलिये सत्संग में घूमते रहते है, सभी के विचारों को परिमार्जित करते रहते है, जिससे सभी के विचार अतिशुद्ध हो सकें। यही शास्त्र का निचोड़ है। सभी शास्त्र इसी को समझाते हैं।

प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी-न्युजीलेन्ड)

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)
सहयोग : पार्षद श्री कनुभगत गुरु पार्षद वनराज भगत

जगत के साथ सम्बन्धकम रखना तथा भगवान के साथ सम्बन्धअधिक रखना चाहिये, लेकिन इसका मतलब यह नही कि व्यवहार नहीं करना, नौकरी-धंधा नही करना। सब कुछ करना है। जिस तरह पोस्टमैन के पास लाखो रुपये का मनिओर्डर आता है, वेडींग की आमंत्रण पत्रिका आती है, मरने का कार्ड आता है, परंतु इसके साथ उस पोस्टमैन का कोई लेना देहना होता ही नहीं है। वह क्रम से जिसका जो रहता है उसे दे देता है। बैंक के मैनेजर के पास करोड़ो रुपये की नोट हो, लेकिन वे रुपये उसके नही होते। इसी तरह हमें भी जगत में व्यवहार करते हुये, कुटुंब का भरण पोषण का भी उत्तरदायित्व करना पडे, लेकिन उसके साथ एटेच नहीं होना चाहिये।

बहुत सारे मरते दम तक एटेच रहते हैं। कईबार उदाहरण देता हूँ कि एक शेठ था, उसके तीन बेटे थे, जब शेठ का अन्तकाल आया तो अपने तीनों बेटों को देखने के लिये बुलवाया। सभी पिता के आसपास थे। उस अन्तिम समय में भी वह गरम होकर बोलने लगा कि तुम सब यहाँ हो तो आफिस कौन देखता होगा ? अन्तिम समय तक मोह नहीं जाता। सत्संग में ऐसा ही करता हूँ। संसार में रहते हुये भी नहीं के बराबर। जगत के साथ निर्लिप्त रहना है।

जगत की जो माया है वह वचनामृत के आधार पर देखे तो जगत के जीवों को माया विघ्नरुप होती है। वही माया भगवान के भक्तों को भक्ति में पोषण का कार्य करती है।

यह सामान्य उदाहरण है। महाराजने कहा कि भजन भक्ति करने में जो विध्नरुप बनते हैं वही माया है। मोबाईल भी कितनी बार विघ्नरुप बनता है। पूजा में बैठे हों, कथा में बैठे हों, जब बजता है तो विघ्न होता है। लेकिन वही मोबाईल सत्संग में, भक्ति में सहायक हो सकता है। घर से ही पूछ सकते हैं कि कितने बजे आरती होने वाली है। कितने बजे कथा है ? वही मोबाईल धर्मकार्य में सहायक हो जाता है। अपने पास, धन हो तो उसका धर्मकार्य में, भगवान के लिये उपयोग में आये तो भक्ति में सपोटींग का काम हुआ। हम सभी एक कुटुम्ब के है, इसलिये मिलकर सत्संग करना है। उत्सव करने का एकमात्र कारण यही है कि इसके सम्बन्धसे सभी विशेष एटेचमेन्ट रहे और जगत का एटेचमेन्ट कम रहे। भगवान के प्रति प्रेम बढे - जगत के प्रति घटे।

जब मैं छोटा था, उस समय छपैया गाँव था। मेरी गाड़ी का ड्राईवर मजाकिया स्वभाव का था। गर्मी का समय था, रात्रि में गाड़ी चला रहा था, उस समय रास्ते में बैलगाडी पर गन्ना लदा हुआ आ रहा था। बैलगाड़ी चल तो रही थी, लेकिन गाड़ी चालक सो गया था। बैल

अभ्यस्त होते हैं इसलिये यथा समय यथा स्थान पर वे पहुंच जाते हैं। गाड़ी चलाने वाले को भी ऐसा विश्वास होता है की हमारे बैल समय से स्थान पर सकुशल पहुंच जायेंगे। मेरे ड्राईवर को मजाक सूझा वह नीचे उतरकर बैल की राश पकड़कर पीछे मोड़ दिया। वह किसान गाड़ी में सोता ही रहा। इसका परिणाम क्या आया, पता है। सुबह होते ही वे बैल गाडी लेकर वापस घर आ गये। (सभा में अह्हास करके सभी हसने लगे)। इसलिये सभी को जागते रहना है, अन्यथा अपनी भी गाड़ी कोई दूसरी तरफ न मोड़ दे। यह समझने की बात है।

अपने देश में सेल बहुत होता है। गाँवो के खेत में होता है। बहुत छोटा होता है। उसे देखकर एक घुवडनें पूछा कि तुम रात्रि में सो जाते हो और तुम्हारा काटा खड़ा रहता है। ऐसा क्यों सेल में बड़ा सुन्दर उत्तर दिया कि मैं तो सो जाता हूँ लेकिन हमारे दुश्म तो नहीं सोते न ? वे जगते रहते हैं। इसी तरह हमें भी सावधान होकर मुमुक्षुओं को रहना चाहिये।

महाराज ने प्रत्येक बात को स्पष्ट कहा है, खूब अच्छी तरह समझाकर कहा है। फिर भी बहुत सारे लोग अर्थ का अनर्थ घटन करके अपनी वात समाज में प्रवाहित करते हैं। इसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने वचनामृत गढड़ा के प्रथम के ४८ वे वचनामृत की बात की। श्रीजी महाराज में तथा श्री नरनारायणदेव में लेश मात्र अन्तर नहीं है। अपने ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण के वचन के आधार पर श्री नरनारायणदेव की खूब महिमा का गुण गान किया और यह भी बताया की श्री नरनारायणदेव का आश्रय कभी छोड़ना नहीं। इन्हीं का आश्रय रखना, इसी में सुख शान्ति है।

महाराजने संप्रदाय की रचना के लिये खूब परिश्रम किया है। एक एक सत्संगी को प्रसन्न किया है। एक-एक मुमुक्षु का कल्याण किया है। हमारा भक्त कैसे अक्षरधाम का अधिकारी बने इसका खूब प्रयास किया है। मुक्तानंद स्वामी को महाराज की मनुष्य लीला में बड़ा आनंद आता था। मुक्तानंद स्वामी कहते कि अलौकिक मूर्ति हो तो अलौकिक लीला करे। इसमें कोई वात नहीं है। लेकिन अलौकिक मूर्ति जब लौकिक लीला करे तब विशेष आनंद आता है। जिस तरह दश का बड़ा प्रधान कार में या विमान में बैठकर घूमने निकले तो सामान्य लगेगा, लेकिन साइकल चलाकर निकले तो सभी को आनंद आयेगा। इस घटना को मिडीयावाला, पेपरवाला तुरंत प्रकाशित कर देगा। इसी तरह महाराज हम सभी को आनंद देने के लिये मनुष्य देह धारण करके हम सभी के बीच रहे। अपने भक्तों से खूब प्रेम किये। अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हम सभी को मिले हैं।

वनविचरण में सेवकराम को साधु जानकर उनकी सेवा किये। परंतु कृतघ्नी जानकर तत्काल उनका त्याग कर दिये। इसके बाद शिक्षापत्री में भी लिखे कि कृतघ्नी की संगत नहीं करनी चाहिये। (कृतघ्न संगस्त त्यवतव्यों। कृतघ्नी कौन ? जो महाराज के किये गये पुरुषार्थ पर दृष्टि न करे, वही कृतघ्नी है। महाराज का हम सभी के ऊपर कितना उपकार है। अपने देश से यहीं आकर रहते हैं तो भी हम सभी के लिये महाराज का मंदिर मिला है। इसलिये सत्संग करना, भजन-भक्ति करना। मंदिर में, मूर्ति में महाराज प्रत्यक्ष बिराजमान है। यह भाव रखियेगा। तभी अपना काम सरल होगा।

चार सैनिक जीप में जा रहे थे। उसी समय समाचार आया। आगे दुश्मनों का केम्प है। इसलिये जल्दी वापस आजाओ। अब जिस मार्ग पर चले जा रहे थे। वह बहुत सकरा था। वापस मोड़पाना संभव नहीं था। बाद में तो चारो मिलकर उस गाड़ी को उठाकर मोड़ दिया। जब वे वापस आये तो केप्टन ने पूछा कि तुम लोग गाड़ी को पतले मार्ग में वापस कैसे मोड़ लिये। तब सैनिको ने प्रेक्टिकल करके उसे मोडना चाहा लेकिन संभव ही नहीं हुआ। बाद में उन सभी ने कहा कि मौत का भय था इसलिये गाड़ी को उठाकर मोड़ लिया गया। अब आगे ऐसा कभी न हो !

इसी तरह हमे भी जन्म मरण का भय नजर के समक्ष रखे तो अपने गाड़ी की दिशा भी बड़ी सरलता से बदल सकते हैं। मायाजाल की तरफ से मोक्ष की तरफ मोड़ा सकता है।

आज्ञांकित शार्दूल भगत

- प्रो. महादेव धोरियाणी

यह एक समय की घटना है जब सहज आनंद के संदेशक श्री सहजानंद स्वामी के परम हितकारी, प्रीतकारी, मंगलकारी संत गुजरात के गाँव-गाँव विचरण करके स्वयं के चारित्र्यशील से तथा सदुपदेश से हजारो मुमुक्षुओं को नीति तथा सदाचार की शिक्षा देते थे।

यहाँ पर ''माथरोट'' गाँव के नापित शार्दूल भगत का जीवन प्रसंग उल्लखित है। जिस तरह पारसमणी के स्पर्श से लोहा सुवर्ण का हो जाता है। इसी तरह परमहंसो के साहचर्य से शार्दूल भगत का समग्र जीवन बदल गया था। सभी लोग उन्हें भगत कह कर पुकारते थे।

माघरोट गांव के ठाकुर ने नौकर को हुकम किया कि शार्दूल नापित को जाकर कह आओकि नाटक जब तक खेला जाय तब तक मसाल लेकर उसे खड़ा रहना है। नौकर जाकर भगत से कहा, भगत ? ठाकुर ने यह कहवाया है कि रात्रि के समय खेले जाने वाले नाटक के समय तक मसाल लेकर उनके पास खड़ा रहना है। नापित ने नौकर से कहा कि यहवात सही है लेकिन भगवान की आज्ञा है कि नाटक नहीं देखना। मैं नहीं आऊँगा लेकिन मसाल लेकर किसी को अवश्य भेंजूगा।

नौकर आकर थोड़ा चढा बढा कर ठाकुर से कहा कि जब से भगत स्वामिनारायण के साधुओं का साहचर्य किया है तब से उसका दिमाग आकाश मे हो गया है। वह कहता है। कि मै भगवान की आज्ञा का लोप न नहीं करेंगा। अपनी जगह पर दूसरे को भेंजने की वात कर रहा था।

ठाकुर को क्रोधकी सीमा न रही, वह हलकी जात का नावित इस तरह बोल रहा था।

नौकर ने कहा कि ठाकुर जब से साधुओं से मिला है तब से चाय, बीडी, सीगरेट, नाटक मंडली जैसा कुछ भी नहीं देखता। नहा-धोकर चन्दन टीका करके स्वामिनारायण का सत्संगी हो गया है। ठाकुर ने आज्ञा किया कि उसे दरबार में बुलाओ। वह आया हाथ में माला, मुख मे स्वामिनारायण, मस्तक पर तिलक-चन्दन, भगत की इस तरह सौम्य मूर्ति देखकर ठाकुर आश्चर्य में पड़ गया। अरे इसे क्या कहें, क्या न कहें।

शार्दूल भगत आने के साथ ही अपना निर्णय सुना दिया ''मुझे मेरे भगवान की आज्ञा है कि हमारे आश्रित नाटक-भाड इत्यादि न देखें। भगत की वात सुनकर ठाकुर ने कहा कि यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगे तो कल सुबह होते ही इस गाँव को छोड़कर चले जाना। आपकी जैसी आज्ञा, मैं कल सुबह होते ही ''माथरोट'' गाँव छोड़कर चला जाऊँगा। लेकिन भगवान की आज्ञा का लोन नहीं करुँगा। कहा जाता है कि वह भगत सदा के लिये पूरे परिवार के साथ गाँव छोड़कर पंचाला के पास खूरतेज नामक गाँव में जाकर बस गया। राजा को सभी वात वतादिया।

राजा ने उन्हे स्वाभिमानी समझकर आश्रय ही नहीं दिया बल्कि परिवार के निर्वाह हेतु आजीविका की भी व्यवस्था कर दिया। पंचाला में उत्सव के समय पधारे हुये श्रीहरि को वहाँ के हरिभक्तों ने शार्दूल भगत की अथ से इति तक सभी वात सुना दी। श्रीहरि बहुत प्रसन्न हुये, फिर भी अन्जाने की कहते हैं कि भगत राजा की आज्ञा मान लिये होते तो गाँव छोड़ना नहीं पडता।

महाराज ! यह वात मैने भगत से कही थी। लेकिन भगत ने कहा कि एक बार भी महाराज की आज्ञा का लोप हो जायेगा तो सदा के लिये यह आदत पड़ जायेगी और बाद में सत्संग से पतित होने का अवसर भी आजायेगा।

सभा में कोई हरिभगत महाराज से आकर कहा कि शार्दूल भगत इस सभा में सबसे पीछे बैठे हुये है। महाराज कीर्तन भजन को बन्द करवाकर भगत को अपने पास बुलाकर गले लगा लिये। प्रसन्न होकर अपने शरीरसे साल उतारकर भगत को भेट में देदिये। महाराज ने सभा में शार्दूल भगत की आज्ञा पालन में दृढता का उदाहरण दिया और कहा कि सभी सत्संगियों को इसी तरह का आज्ञापलन करना चाहिए। ऐसा करने से आज्ञा पा लोप नहीं होगा और महाराज की प्रसन्नता मिलेगी।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

पत्र नं. १३

स्वस्ति श्री अमदावाद महाशुभ स्थाने पूज्याराधे, उत्तमोत्तम, परमपूज्य धर्मधुरंधर, धर्मरक्षक, अधर्म उच्छेदक, ज्ञानवैराग्यादिक-सद्‌गुणदायक काम-क्रोध-लोभ-मोहादि अंतर शत्रुनाशक, अध्यात्मक-अधिभूत, अधिदैव, त्रिविधतापदग्धजन, शांतिकारक भक्तजनोपरि दयाकारक, मोक्ष फलदायक, परोपकारक, कृपासागर एवं अनेक शुब उपमा लायक प्रगट पुरुषोत्तम स्वरुप आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण महाराजनी चिरंजीवी घणी हजो । एतान हलवदथी ल. साधु माधवचरणदास आदि साधु सर्वे तथा दवे मकनजी तथा मेता रणछोड आदि हरिभक्त सर्वेना साष्टांग दंडवत प्रणाम सेवा में अंगी करवा । विशेष लखवा कारण ए छे जे महाराजश्रीने शरीरे फसर जेवुं सांभल्यामां आव्युं हतुं ते श्रीजी महाराजने सुवाण करी हशे तेनो पत्र रावल गोविंदराम भेगो लखवो । एटले हरिभक्त सर्वेने दर्शन जेटलो आनंद उपजे । साधु तथा ब्रह्मचारी तथा पाला तथा हरिभक्त सर्वेने अमरा जय स्वामिनारायण केजो ।

संवत १९१९ ना ज्येष्ठ वदी-११ ने शुक्रवारे रात्रे धटिका ८ गये बक्यो छे उतावलमां ।

ल. चरणसेवक आचारज मोरारजीना दंवडत सेवामां स्वीकार करवा ।

पूजाराधे आचारश्री १०८ अयोध्याप्रसादजी महाराज हरिकृष्ण महाराज ।

पत्र-१३

संप्रदाय के धर्मवंशी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्रति आत्मबुद्धि, उनेक पद (स्थान) के प्रति भगवद् भाव कितना उन्नत विचार का था जो इस पत्र से स्पष्ट होता है । आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री सं. १९२४ फाल्गुन शुक्ल-७ को धाम मे गये उससे पूर्व करीब पांच वर्ष पहले यह पत्र लिखा गया था । संत-हरिभक्तों को आचार्यश्री में तथा उनके स्थान (पद) में कितनी आस्था है, जो इस पत्र के माध्यम से विशएष प्रतीति कराता है । सभी संत-हरिभक्त धर्मवंशी आचार्य को प्रगट पुरुषोत्तम के स्वरुप में मन-कर्म-वचन से समझते थे । वैसा ही वे व्यवहार भी करते थे । आचार्यश्री के इस पत्र के दर्श; से तथा हस्ताक्षर भी करते थे । आचार्यश्री के इस पत्र के दर्शन से तथा हस्ताक्षर के दर्शन से भी संत-हरिभक्तों को प्रभु के साक्षात् दर्शन की अनुभूति कराता है ।

इस तरह से उत्कृष्ट प्रकार के आत्मीय भाव को - समझ को प्रगट करने वाला माधवचरणदास स्वामी का यह असल पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम में होल नं. ११ में हरिभक्तों के दर्शनार्थ रखा गया है । इस पत्र का सभी हरिभक्त दर्शन अवश्य करेंगे । इसके साथ ही श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करना कि हम सभी को धर्मवंसी आचार्यश्री में प्रेम-महिमा-पूज्यभाव बना रहे तथा उनके प्रति उत्तरोत्तर आस्था की वृद्धइ होती रहे ।

प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युझियम का द्वितीय स्थापना दिन

फाल्गुन शुक्ल तृतीया ता. १४-३-१२ गुरुवार को श्री नरनारायणदेव का वार्षिक पाटोत्सव तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम का स्थापना दिन के अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से म्युजियम का द्वीतीय वार्षिक उत्सव दोपहर के बाद सुंदर महापूजा अभिषेक मुख्य होल में रखा गया है। जिसके सहयजमान रु. ११,०००/- तथा ५,०००/- निश्चित किया गया है। जिन्हे महापूजा में बैठने की इच्छा हो वे सर्व प्रथम अपना नाम लिखवाने का कष्ट करें। मुख्य यजमान तथा सहयजमान मुख्य आफिस में अवश्य संपर्क करें।

मो. : ९९२५०४२६८६ (दासभाई) फो.नं. ०७९-२७४८९५९७

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि डिसेम्बर-२०१२

रु. ४००००/-	धर्मकुल आश्रित धर्मप्रेमी एक हरिभक्त की तरफ से।	रु. ६०००/-	अ.नि. कान्ताबहन नानजी केराई (मांडवी-कच्छ)
रु. १००००/-	चि. मेहुलभाई के लग्न प्रसंग पर डाह्याभाई नारणदास परिवार माणसाला वती - छोटे पी.पी. स्वामी	रु. ५१५१/-	विनोद पटेल - सिकन्दराबाद
		रु. ५००१/-	भद्राबहन प्रवीणभाई सावरीया (मुलुंड-मुंबई)
रु. २५०००/-	पटेल विठ्ठलभाई रवजीभाई (बापूनगर-अमदावाद)	रु. ५०००/-	श्रीजी की प्रसन्नता के लिये (चांदीसणा)
		रु. ५०००/-	हर्षित प्रवीणकुमार भावसार (बोपल)
रु. २५०००/-	वरजीभाई जेरामभाई रुपाणी परिवार	रु. ५०००/-	प.भ. प्रकाशबाई प्रहलादभाई पटेल (जमीयतपुर)
रु. २५०००/-	जगदीशभाई गढीया (अमदावाद)		
रु. ११११११/-	अनंतभाई एच. पटेल (इसनपुर-अमदावाद)	रु. ५०००/-	अतुलभाई पोथीवाला (अमदावाद)
रु. ११०००/-	पटेल धीरजभाई करशनभाई (अमदावाद)	रु. ५०००/-	जतीनभाई अमृतभाई पटेल (मणीनगर)
रु. १११११/-	रसिकभाई शीवाभाई पटेल	रु. ५०००/-	पटेल रमणभाई माधाभाई पटेल (अमदावाद)
रु. २००००/-	पटेल पुनमभाई मगनभाई (अमदावाद)		
रु. ७१००/-	रेखा बहन एम. मिस्त्री (अमदावाद)	रु. ५०००/-	महेशभाई एस. पटेल (लालोडावाला)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (डिसेम्बर-२०१२)

ता. २	महेन्द्रभाई अमीन (आस्ट्रेलिया)		श्रीधर कीर्तिभाई रावल (अमदावाद)
ता. ४	प्रात: वीर प्रीतेश हीराणी, सायंकाल लव प्रीतेश हीराणी	ता. २३	दीपकभाई पोपटलाल शेठ (राजकोट)
		ता. २३	अ.नि. जटाशंकर पोपटलाल शाह (अमदावाद)
ता. ७	मनजीभाई कानजीभाई राबडीया (मोरेश्यस)	ता. २६	अश्विनभाई (बायरन) कृते बड़े पी.पी. स्वामी
ता. ११	परेशभाई जुठाणी (आस्ट्रेलीया)	ता. २७	मनजीभाई रवजीभाई वेकरिया (बलदीया)
ता. १४	प.पू.अ.सौ. बड़ीगादीवालाजी की प्रेरणा से सां.यो. कानबाई गुरु रतनबाई (केरा-कच्छ)	ता. ३०	प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी की प्रेरणा से वर्षा बहन नवीनचंद्र पाठक पौत्र योग भाविन पाठकके जन्म के निमित्त।
ता. १८	प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी की प्रेरणा से		

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिस्वाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

श्रीहरि के दिव्य चरित्र कल्याणकारी है

(शा. हरिप्रियदास - गांधीनगर)

''संत जमे ते भेणों हुं जमुं रे,
संत जमे ते केड्य हुं भमुं रे ।''

संत की महिमा का गुणगान करते हुये श्रीहरिने सभा में कहना प्रारंभ किया है कि हे संतो ! आप लोग तो सभी के पूज्य है। आप सबकी जो सेवा करता है वह भगवान की सेवा करता है। प्रभु की ऐसा वाणी सुनकर सभा में बैठे हुये वडताल के गोसाई नारणगिरीने कहा कि महाराज ! कल इन सभी संतो को मेरी तरफ हलुआ खिलाना है । प्रभु गोसाई की विन्ती सुनलेते है । दूसरे दिन से लथपथ हलुआ तैयार हो गया । भगवान स्वामिनारायण भोजन कर लिये उसके बाद संत भोजन करने बैठे। स्वयं प्रभु भोजन परसने लगे। संतो की कितनी बड़ी भाग्य । प्रभु संतो को बड़ी श्रद्धा के साथ भोजन-हलुआ को खिलाये । गोसाई जी साथ भोजन करने बैठे । उस समय गोसांईजी भोजन करते समय कहने लगे कि हे प्रभु ! संतो को खूब हलुआ खिलाइयेगा। सभी संत बड़ी श्रद्धा के साथ भोजन कर रहे थे। हलुआ लेकर महाराज गोसांई जीके पास आये। गोसांईजी महाराज को देखकर अपना भोजन पात्र लेकर दौड़ने लगे । महाराजभी उनके पीछे-पीछे दौड़ने लगे । महाराज के हाथ में हलुवा का पात्र है। पात्र में से महाराज हलुवा लेकर गोसांईजी के ऊपर फेंकने लगे। महाराज थक कर वापस आगये और सभा में जाकर विराजमान हो गये।

उस समय वहाँ पर संत-भक्त परमात्मा के इस चरित्र को देख रहे थे । सभी इस दिव्य आनंद का लाभ ले रहे थे।

प्रिय भक्तों ! आधारानंद स्वामी इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान के इस दिव्य लीला चरित्र का वर्णन करते हुये लिखा है कि भगवान इस तरह का चरित्र आनंद के लिये करते हैं । आनंद विनोद के ऐसे चरित्र भक्तों को स्मरण के लिये होते है। ऐसे चरित्र बड़ी सरलता से याद रह जाते हैं। गीता में भगवान ने कहा है कि -

''जन्म कर्म च मे दिव्यं यो विन्ती तत्वत''

भगवान के सभी लीला चरित्र दिव्य हैं । कल्याणकारी है । सुख देने वाली हैं । जो इस तरह समझकर उनकी भजन-भक्ति करता है वह शरीर का त्याग कर बड़ी सरलता से भगवान को प्राप्त करता है।

•

सरपंच का काम हो गया

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

कुछ समय पहले की वात है। अपने संप्रदाय में एक उत्सव मनाया गया । उस उत्सव में गाँव के प्रधान भी आये। कथा-प्रवचन के कुछ अंश उनके हृदय में उतरा। इससे पूर्व उनके हृदय में ऐसी भावना कभी नहीं आयी थी।

गाँव में भैंस का गोबर उठाने के लिये एक पात्र होता है, जिसमें प्रतिदिन गोबर उठाया जाता है । उस पात्र में गुलाब का फूल रखा जाय तो पात्र सुगन्धित नहीं हो जायेगा । क्योंकि प्रतिदिन उसमें गोबर उठाया जाता है । जिसके हृदय में जगत का व्यवहार भरा हो उसके हृदय में कथा-प्रवचन के शब्द कैसे उतर सकते

है । लेकिन उसके प्रधान के हृदय में एकता अवश्य रह गयी - कितनी सुन्दर भोजन की व्यवस्था है, लाखो लोग भोजन के लिये पधारे हैं। विना धक्का मुक्की के सभी लोग भोजन कर रहे हैं। कहीं कोई आवाज नहीं, शान्ति से सभी कार्य हो रहा है। किसी को कोई खबर नहीं किस तरह से यह कार्य हो रहा है। सभी युवान स्वतः कार्य में लगे हुये है । उत्सव की व्यवस्था देखकर वहीं उनके दिमाक में बैठायी । वापस घर आते समय गाँव के हरिभक्तों से कहने लगे कि हमारे यहाँ विवाह प्रसंग में मात्र पांचसौ जितने लोग थे फिर भी धक्का मुक्की हो गयी। मारामारी हो गयी । यहाँ पर देखिये तो स्वामिनारायण वालों के यहाँ चमत्कार जैसा है। लाखो आदमी पांच घंटे में भोजन करके चले गये किसी को पता भी नहीं चला। इसके बाद वे जहाँ जाते यही बात करते। स्वामिनारायण वालों की वात कहनी पड़े। चुपचाप भोजन करके चलते बनते हैं । कोई कहीं से आवाज भी नहीं करता । जब स्वामिनारायण वाले एक दूसरे से मिलते तो यही कहते क्यों आप उस कार्यक्रम में दिखाई नहीं दिये, इस तरह की सभी में आत्मीयता प्रधानने देखी। सभी जगह यही वात करते रहते। देखिये ये इनका भतीजा आया, यह इनका बेटा है। ये बहुत बड़े आदमी है। इत्यादि सुनकर देखकर प्रधान की आंखे चढी की चढी रह जाती थी । जब उन्हें कोई स्वामिनारायण वाला मिलजाता तो वे एकही बात करते स्वामिनारायण में खाने पीने की व्यवस्था बड़ी अच्छी होती है । अब रात दिन स्वामिनारायण - स्वामिनारायण बोलते रहते । इस तरह एक दिन स्वामिनारायण बोलते-बोलते उनकी शरीर छुट गयी। उनके जीव की सद्गति हो गयी। यही उत्सव करने का रहस्य है। कोई ऐसा जीव आजाय तो कभी अपने जीवन में भगवत् स्मरण न किया हो। भजन भक्ति न किया हो, फिर भी उसे एक भी प्रसंग अन्तिम समय में आ जाय तो वह मुक्त हो जाता है।

इसी लिये श्रीजी महाराज ने प्रथम के तीसरे वचनामृत में कहा है कि ''भगवाने जे जे स्थानक ने विषे जे जे लीला कही होय ते जो सांभरी आवे अथवा सत्संगी सांभरी आवे अथवा ब्रह्मचारी ने साधु सांभरी आवे तो तने योगे करीने भगवाननी मूर्ति पण सांभरी आवे। अने ते जीव मोटी पदवी ने पामे अने तेनुं घणुं रुडुं थाय। ते माटे अमे मोटा मोटा विष्णुयाग करिये छीए। तथा जन्माष्टमी अने एकादशी आदिक व्रत ना वर्षो वर्ष उत्सव करीये छीए ने तेमां ब्रह्मचारी, साधु, सत्संगीने भेगा करीये छीए अने जो कोईक पापी जीव होय ने तेने पण जो एमना अन्तकाले स्मृति थई आवे तो तेने भगवानना घामनी प्राप्ति थाय।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
छपैया: : www.chhapaiya.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
टोरडा : www.gopallalji.com
नारायणघाट: www.narayanghat.com
वडनगर : www.vadnagar.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"परमात्मा के न्याय पर कभी शंका नही करनी चाहिये"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

एकवार एक व्यक्ति नाऊ के पास बाल कटाने गया । बाल कटाते कटाते बात कर रहा था । उसी बीच भगवान की वात नीकली । नाऊ ने कहा कि इस दुनिया में भगवान जैसा कुछ भी नहीं है । यदि भगवान होते तो कोई रोगी क्यों होता । दु:खी क्यों होता ! गरीब क्यों होता ! किसी को कोई तकलीफ ही नहीं होती । बाल कटाने वाला भाई बालकटाकर बाहर निकला, आगे चला तो उसे एक लम्बा बाल वाला आदमी मिला, उसके अलांवा लंबी दाढी वाला भी मिला । अब इन दोनो व्यक्ति को साथ लेकर उस नापित के पास ले गया वहाँ जाकर नापित से कहने लगा कि इस दुनिया में नापित जैसे व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है । यदि नापित का अस्तित्व होता तो इसे तरह दाढी-बाल वाले व्यक्ति कैसे रहते । यह सुनकर नापित ने कहा कि, इस में मेरा क्या कुसुर ? यदि मेरेपास आवे तो न मैं बाल काटूँ । इसीतरह उत्तर देते हुये पहले वाले भाई ने कहा कि दुनिया में कोई दु:खी हो, दरिद्र हो, तो इसमें भगवान को क्यों दोषित किया जाय ? सामान्य बाल कटाने के लिये भी नाऊ की दुकान में जाना पड़ता है, लाईन में बैठना पड़ता है, नाऊ की दुकान का नियम पालन करना पड़ता है, तो वो तो परमात्मा हैं । परमात्मा की शरणागति स्वीकार करनी ही पड़ेगी । परमात्मा के बनाये नियम का पालन करना पड़े । प्रयत्न तो करना ही पड़ेगा । सामान्य पैसे कमाने के लिये ८-१० घन्टे परिश्रम करना पड़ता है । आप जो भी काम करते हों उसके निति नियम का पालन करना पड़ता है । अर्थात् किसी क्षेत्र में आगे बढना हो तो खूब प्रयत्न करना पड़ता है । इसलिये परमात्मा के न्याय पर कभी शंका नहीं करनी चाहिये । ईश्वर में श्रद्धा कम न हो इसका सदा ध्यान रहना चाहिये । तभी अपने जीवन में सुख मिलेगा । अपने जीवनमें जो भी सुख-दु:ख आता है वह स्वयं के प्रारब्धानुसार आता है । हम जो भी कर्म करते हैं उस परिणाम स्वरुप सुख-दु:ख आता है । हम देखते हैं कि एक मां की कूंख में से जन्म लेने वाले भाई-बहन, किसी के पास करोड़ो रुपये होते हैं और किसीके पास दो समय भोजन का भी व्यवस्था नहीं होती । कोई माता पिता अनपी सन्तान की खराब नही चाहता प्रत्येक संतान अपने भाग्य के अनुसार सुख दु:ख भोगते है इसी तरह परमात्मा भी अपनी माता-पिता हैं । वे भी कभी किसी जीव का अहित नहीं चाहते । इस जगत में जो भी हो रहा है वह विधिके अनुसार हो रहा है । समय की प्रतीक्षा करनी चाहिये । समय बड़ा बलवान होता है । हम चाहे जितना समर्थ हों फिर भी किसी को अपने से छोटा नहीं समझना चाहिये । थोडा भी अहंकार बिना रखे भक्ति करनी चाहिये । क्योंकि, गौरेया चिऊंटी को खाजाती है । परंतु जब गौरावा (पक्षी) मरजाती है तब बहुत सारी चीटियां एक साथ उसे उटा ले जाती हैं और का जाती हैं । एक वृक्ष में से हम कितनी माचिस बना लेते हैं । सौ से भी अधिक माचिस बनजाती है । परंतु सम्पूर्ण जंगल को जलाने में एक माचिस की तीरी पर्याप्त है । इसलिये जो भी स्तकर्म करें अहंकार बिना करें । एक शेठ ज भी दान देता है तब नजर नीचे रखकर देता है । किसी की तरफ नहीं देखता ।कोई उससे पूछा, आपदान देते समय किसी की तरफ क्यों देखते नहीं है । इसका कारण क्या है ? तो शेठने कहा कि जो कुछ मैं देता हूँ उसमें रा कुछ भी नहीं होता । मैं निमित मात्र हूँ . परमात्मा हमें निमितत बनाया है । परंतु लोज मुझे दानवीर के रुप में देखते हैं । इसलिये मैं अपना मस्तक लज्जा से झुका लेता हूं । इसी तरह हम भी इस संर में निमित्त मात्र हैं । एसा मानकर विनम्र भाव से कसभी को भक्ति करनी चाहिये । जिस तरह सूर्य का प्रकाश सभी को समान मिलता है । गरीब को कम तथा अमीर को अधिक मिलता है ऐसा नहीं है । सि तरह परमात्मा की कृपा सभी जीव मात्र मान ोकी है । अपने ऊपर जो भी दु:ख आता है वह अपने ध्रम का पाल है । या हमारे दो,ों का परिणाम है । अपने दो,ों को दूर करके परमात्मा को तरफ बढने का सतत प्रयत्न करना चाहिये इसी में सभी का कल्याण है ।

●

प्रार्थना से प्राप्ति

– सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा (मेडा)

हे प्रिय भक्तों ! हम प्रतिदिन भगवान की तरफ दश मिनिट खड़ा होकर शांति से अन्तर्नाद करते प्रार्थना करे कि हे प्रभु हमारा सर्वविधकल्याण करना । प्रार्थना सुख की चाभी है । प्रार्थना जीवनका बल है । प्रार्थना हृदय का स्थान है । प्रार्थना अश्रुकी धारा है । प्रार्थना सर्वोपरीकारी क्रिया है । प्रार्थना अन्तर की आवाज है. प्रार्थना परमात्मा का चिन्तन है । प्रार्थना आत्मा की विश्रान्ति है । प्रार्थना बुझते हुये दीपक का घृत है । प्रार्थना जीवन का पवित्रीकरण है । प्रार्थना परमतत्व को विवस करती है । प्रार्थना जीवन की आवश्यक वस्तु है । प्रार्थना प्रभु के दरवाजे की चाभी है । प्रार्थना अहंकार को पिघलाती है । प्रार्थना भगवान से मिलाती है । प्रार्थना प्रत्येक की धरोहर है । प्रार्थना से कुत्सित वासना दूर होती है । प्रार्थना संकट से उबारती है । प्रार्थना भगवान के पास ले जाती है । प्रार्थना मन के मैल को धोने का साधन है । प्रार्थना के माध्यम से व्यक्ति परमात्मा को अधीन करलेता है और संसार की प्रत्येक लौकिक वस्तुयें घूटने लगती है ।

एक समय श्रीजी महाराज सारंगपुर में होली का महोत्सव किये । उस में देश–देशान्तर से हरिभक्त पधारे । उस समय महाराज काठियावाड़ की स्त्रियों से प्रसन्न होकर कुछ मांगने को कहा । यह सुनकर स्त्रियो ने महाराज से खजूर, बतासा, नारियल, इत्यादि प्रसादी की वस्तु मांगी । लेकिन गुजरात की स्त्रियों ने महाराज से अद्‌भुत वस्तु की मांग की । जिस की चर्चा निष्कुलानंद स्वामीने भक्तचिंतामणी के ६४ वें प्रकरण में की है । महिलाओं ने मागा कि हे प्रभु !

महाबलवंत माया तमारी, जेणे आवरियां नरनारी ।
एवं वरदान दीजिये आपे, एह माया अमने न व्यापे ।
वणी तमारे विषे जीवन, आवे मनुष्य बुद्धि कोई दन ।
जे जे लीला करो तमे लाल, तेने समझुं अलौकिक ख्याल ।
सतसंगी जे तमारा कहावे, तेनी केदी अभाव न आवे ।
देश काल ने क्रिया एकरी, केदी तमने न भूलिये हरि ।
काम क्रोध, ने लोभ कुमति, मोहु व्यापिने न फरे मति ।
तमने भजतां आडुं जे पडे, मागिये ए अमने न नडे ।
एटलुं मागिये छैये एम, देजो दया करी हरि तमे ।
बड़ी न मांगिये अमे देह, तमे सूली लेज्यो हरि तेह ।
केदी देशो मां देहाभिमान, जेणे करी विसरो भगवान ।
केदी कुसंग नो संग न देज्यो, अधर्म थकी उगारी लेजो ।
केदी देसो मां ससारि सुक, देशो मां प्रभु वास विमुख ।
देशो मां प्रभु भक्त मोटाई, मद, मत्सर, ईर्ष्या कांई ।
देशो मां देहसुख संयोग, देशोमां हरिजन नो वियोग ।
देशोमां हरिजननो अभाव, देशो मां अहंकारी स्वभाव ।
देशो मां संग नास्तिकनो राय, मेली तमने जे कर्म ने गाय ।
ए आदि नथी मांगता अमे, देशोमां दया करीने तमे ।
पछी बोलिया श्याम सुंदर, जाओ आव्यो तमने एवर ।
मारी माया मां नहि मुंझाओ, देहादिक मां नहि बधाओ ।
मारी क्रियामां नहि आवे दोष, मने समझसो सदा अदोष ।
एम कह्युं थई रडियात, सहुए सत्य करो मानी वात ।
दीधी दास ने फगवा एवा, वीजुं कोई समर्थ एवुं देवा ।
एम रम्या रंगभर होली, हरिसाथे हरिजन टोली ।

इसलिये हम भी भगवान से एसी प्रार्थना करें कि गुजरात की स्त्री भक्तों की तरह हमें भी समझ दीजिये । ऐसी हम सभी की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के चरणों में प्रार्थना ।

●

सिद्धपुर के चमत्कारी हरिकृष्ण महाराज

– पटेल रेखाबहन कीर्तिकुमार (ऊँझा)

ऊँझा से हाईवे से होते हुये मुक्तपुर बामडवाडा तथा स्वामिनारायण गुरुकुल के पास यह मंदिर आया हुआ है । ऊँझा से १२ कि.मी. दूर है । हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ कहाजाता है । मातृश्राद्ध करने का शास्त्रीय विधान है । पाटण के सिद्धराज ने इसी तीर्थ भूमि को वसाया था । इसलिये इसका नाम सिद्धपुर पड़ा । ऐसे पवित्र स्थानों में दान पुण्य करने से अपने मनोरथ पूर्ण होते हैं ।

सिद्धपुर में श्री नरनारायणदेव देश का सिखरी मंदिर है । मध्य मंदिर में धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज विराजमान है तथा बगल में राधाकृष्ण देव की शुख शैया है । यहाँ के हरिकृष्ण महाराज बड़े चमत्कारी हैं । भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करते हैं । बहुत सारे हरिभक्त पूनम को पैदल चलकर दर्शन करने जाते हैं । श्रीहरिकृष्ण महाराज के सामने चलकर दर्शन करने जाते हैं । श्रीहरिकृष्ण महाराज के सामने अपने संकल्प रखते हैं, और वह संकल्प पूरा भी होता है । इन चमत्कारी देव की कृपा से पुत्र की इच्छा वाले को पुत्र, धन की इच्छावाले को धन, बंगला की इच्छावाले कों बंगला, गाड़ी की इच्छावाले को

गाड़ी बड़ी सरलता से मिलजाती है। गाँव के मंदिर की प्रतिष्ठा प.पू. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने की थी। इस मंदिर की प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजने की थी । इस गाँव को महाराजने अपने तत्कालीन ५०० परमहंसो के साथ अनेको बार पधारकर पवित्र किया है।

इस पवित्र तीर्थ स्थान में कर्दमऋषि एवं देवहूति से कपिल भगवान का प्रागट्य हुआ था। वे ही भगवान कपिल अपनी माता देवहूती को सांख्य का ज्ञान प्रदान किये थे। माता को सिद्ध स्थिति तक पहुंचा दिये थे। इसीलिये इस भूमि को पवित्र भूमि कहा जाता है। प्रेम के कारण कपिल भगवान के नेत्र से हर्ष के आंसू यहाँ गिरे थे। इस सरोवर में श्रीहरि संतो-पार्षदो के साथ स्नान किये थे । यहाँ पर श्रीहरि ने खूब दान किया है। यहाँ पर बटेश्वर महादेव का मंदिर तथा पांडवो की गुफा है। इस पवित्र तीर्थ में दधीचि ऋषि का भी आश्रम है। कलियु गमें सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायण यहाँ पधारेंगे और आपके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे ऐसा कर्दम ऋषि को वरदान दिया गया था।

रामप्रतापभाई नदी में स्नान करने पधारे -एकबार धर्मभक्ति के पुत्र रामप्रतापभाई ने सरस्वती से कहा कि अरे ब्रह्मा की बेटी हमें स्नान क्यौं करा नहीं रही है। ऐसा कहकर नदी में जाकर बैठ गये। उसी समय जांघभर पानी का प्रवाह आया और सभी लोग स्नान किये । यह बिन्दु सरोवर की महिमा है।

श्री घनश्याम लीलामृत सागर के ५० वें तरंग में ऐसा प्रमाण मिलता है-

सात दिन रह्यांधारी ३२, त्यांथी पधार्या श्रीहरि नामे भगवान छडीदार तेने घेर तथा निरधार, बीजे दिवसे दीन दयाल जोवा सारु गया रुद्रमाल, तेने देखी महाराज, आपणे करवुं जे काज, आ तीर्थ भूमि छे सुन्दर, अहीं करावबुं छे काम, अमे उतारे आव्या श्याम बेउदिन रह्यां सुखधाम।

●

श्रीहरि का कल्याणकारी मार्ग

- लाभुबहन मनुभाई पटेल (कुंडाल)

श्रीहरिने कल्याण के मार्ग का विस्तार करने के लिये सदाव्रत प्रारम्भ किया था । यज्ञ करवाया, बड़े बड़े मंदिर बनावाया, मूर्तियों की प्रतिष्ठा की, आचार्यो की स्थापना की, शास्त्रों की रचना करवायी, संतो को तैयार किया, प्रसादी की अनेकों वस्तु भक्तों को भेंट में दी। इस सभी साधनो से सभी के कल्याण का मार्ग खोल दिया। श्रीहरिने यह संकल्प किया कि हमें असंख्य जीवो का उद्धार करना है। इसके लिये उन्हों ने अन्नक्षेत्र प्रारंभ किया - जिससे जो भी मेरा अन्नखाये तो उसका कल्याण होजाये। श्रीहरि स्वयं इन अन्नक्षेत्रों में आने वाले को अपने हाथों परसकर भोजन कराते। इस तरह करने से जो भी भोजन के लिये आता उसे प्रभु की वातें सुनाई जाती और वह प्रभु का सत्संगी हो जाता। इसलिये प्रभु के लिये लिखा गया है कि - ''पामरपतित उधार्या अगणित नरनारी''। यह प्रभु की आरती का पद है, जिसे प्रभु आज भी चरितार्थ कर रहे हैं।

इसके अलांवा श्रीजी महाराजने जीवों के कल्याण हेतु तीर्थधामों की रचना की। जैसे - छपैया में नारायण सरोवर, अहमदावाद में कांकरिया, गढपुर में घेला नदी का किनारा, वडताल में गोमती, इत्यादि जलाशयों में श्रीहरि अनेकों बार स्नान करके जलक्रीडा किये थे । जिस में अनंत कोटि के अधिपति स्नान करें उनकी महिमा का वर्णन करना कठिन है। इन जलाशयों में जो भी स्नान करे उन सभी का कल्याण निश्चित है। यदि अन्तिम समय में इनकी स्मृति होजाय तो भगवान के साथ संबन्धहोगा और उसे स्वयं प्रभु अपने धाम में लेजायेंगे।

इस तरह भगवान स्वामिनारायण ने ''न भूतो न भविष्यति'' जो अन्त्यन्त दुर्गम है असंभव है उस अप्राप्य अक्षरधाम के सुख को दिया है।

''कोटि उधाड्या कल्याण नां, भाग्यना खोल्या भंडार।
भूख लागी भूख्याजननी रे, जगे कर्यो जयजयकार॥
स्वामिनारायण सहुने, नक्की लेवडाव्युं नाम।
भजन करावी आ भव मां, आपियुं अक्षरधाम॥

इस तरह श्रीहरिने कल्याण का सदाव्रत खोल दिया था। उनकी शरणागति में जो भी आया उसका उन्हों ने कल्याण किया । आज भी श्रीहरिने मूर्ति, आचार्य, शास्त्र, तथा धर्मकुल आश्रित संतो द्वारा मुक्ति का सदा व्रत चालू रखा है। इसलिये स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने लीखा है कि -

''कलश चढाव्यो कल्याण नो रे।
सहुना मस्तक पर मोड, पुरुषोत्तम प्रगटी रे॥''

सत्संगी मात्र को चलना चाहिये तभी उनकी कल्याण की भावना को बल मिलेगा और सत्संग में रहकर मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध होगी।

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धनुर्मास धून महोत्सव

श्रीनगर अहमदाबाद शहर में संप्रदाय के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्रीहरि ने स्वस्वरुप श्री नरनारायणदेव की स्थापना की । उन्हीं के सानिध्य में समस्त धर्मकुल की शुभ निश्रा में तथा ब्रह्मनिष्ठ संत तथा हजारो, धर्मकुल आश्रित हरिभक्तों की उपस्थिति में ता. १६ दिसम्बर से पवित्र धनुर्मास का प्रारंभ हुआ । ठंडी की भी शुरुआत हो गई । इतनी ठंडी में भी श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून में प्रसादी का सभा मंडप हरिभक्तों की भीड़ से भर जाता है । पूज्य महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन अनुसार ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, नटु स्वामी, राम स्वामी, आदि संत पार्षद मंडल तथा हरिभक्तों ने सुंदर सेवा की । इस वर्ष भी समस्त धर्मकुल, ब्रह्मनिष्ठ संत तथा २००० जितने हरिभक्तों की संपूर्ण महिने की धून तथा ६००० हजार से भी अधिक दैनिक धून हरिभक्तों द्वारा की गई । (शा. नारायणमुनिदासजी)

बामरोली श्री स्वामिनारायण मंदिर में वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

मध्य प्रदेश के मुरेना तालुके के चंबल घाटी में आये हुए श्री नरनारायणदेव के आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की कृपा से बामरोली श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का वार्षिक पाटोत्सव श्री नरनारायणदेव के अनन्य आश्रित प.भ. सुरेन्द्रभाई पटेल (विशालावाले) के यजमान पद पर धूमधाम से संम्पन हुई । इस प्रसंग के उपलक्ष में दि. २९-११-१२ से ता. ३-१२-१२ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ की पंचदिनात्मक पारायण शा. सत्यप्रकाशदासजी (मूली) के वक्ता पद पर हुई । ता. ३-१२-१२ को ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद) स.गु. महंत शा.स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट), स.गु.म.स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा) महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा) तथा भुज के संतो के वरद् हाथों से हुआ । अन्नकूट बनाने की सेवा नाथद्वारा के संतोने श्रद्धा के साथ की ।

प्रासंगिक सभा में संतोने यजमानश्री की सेवा की प्रशंसा की । प.भ. सुरेन्द्रभाई की तरफ से ठाकुरजी को संतो तथा हरिभक्तों के साथ समस्त गाँव को पकवान का महाप्रसाद खिलाया । मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजीने प्रसंग में बहुत सेवा-महेनत की। (शा. सत्यप्रकाशदासजी, मूली)

गवाड़ा गाँव में त्रिदिनात्मक ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशासजी, स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारायणघाट) की प्रेरणा से ता. १५-११-१२ से ता. १७-११-१२ तक गवाड़ा गाँव के श्रीहरि गीता का सुंदर आयोजन किया । पारायण के यजमानश्री अ.नि. वालजीभाई बालचंददास कोठारीश्री के परिवाज ह. परसोत्तमभाई अमृतभाई, गोपालभाई, जयंतीभाई तथा रमेशभाई आदि परिवाजनो ने लाभ लिया था ।

कथा के वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने विराजीने हरिभक्तो को कथा का लाभ दिया । दोनो समय यजमानश्रीकी तरफ से प्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गई । पारायण पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । पूर्णाहुति करके सभा में विराजे थे । स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी । स.गु.शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी तथा स्वा. माधवप्रियदासजी आदि संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को दिव्य आशीर्वाद दिये । सभा में वजीबा के विजापुर के प्रसादी के स्थान में रिनोवेशन की सुंदर सेवा की गई । (शा.स्वा. कुंजविहारीदास)

आजोल गाँव में त्रिदिनात्मक ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारायणघाट के महंतश्री स.गु.शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से आजोल गाँव में ता. १७-११ से १९-११-१२ तक श्रीमद् भागवद दशमस्कंद की त्रिदिनात्मक कथा की । श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण सत्संग मंडल आश्रित इस कथा के वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने विराजकर लाभ दिया । प्रथम दिवस पोथीयात्रा तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का दिव्यानंद भक्तोंने मनाया ।

पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । प्रासंगिक सभा में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, स्वामी अभय प्रकाशदासजी, मुनि स्वामी, स्वा. कुंजविहारीदासजी तथा स्वा. माधवप्रियदासजीने प्रसंगोचित प्रवचन किया । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने यजमान परिवार तथा समस्त गाँव को

आशीर्वाद दिया । समग्र प्रसंग में ग्रामजनो तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल हिरावाडी की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(शा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

बिलोदरा गाँव प्रथम शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से बिलोदरा में ता. १२-१२-१२ को रोज प्रथम भव्य शाकोत्सव मनाया गया ।

नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण यहाँ किया गया । ५०० जितने भाविक भक्तोंने तन, मन, धन से सेवा करके शाकोत्सव का लाभ लिया । स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने शाकोत्सव के महिमा की कथा की । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । अपने हाथों से सब्जी का वधार किया । ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, मंहत स्वामी (अहमदाबाद) के प्रतिनिधिजे.पी. स्वामी, पुराणी विश्वविहारी स्वामी, नटु स्वामी, योगी स्वामी, श्रीवल्लभ स्वामी, ऋषि स्वामी, माधव स्वामी आदि संतगण पधारे थे ।

सूचना : बिलोदरा में नूतन मंदिर का काम वर्तमान में चालु है । सेवा देने वाले हरिभक्तों को त्वरित सेवा लाभ लेने हेतु अनुरोधहै।

(भीखाजी तथा ग्रामजन)

प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिल कुंडाल (ता. कड़ी) में ९३ वें पाटोत्सव के उपलक्ष में पंचान्ह पारायण किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) की प्रेरणा से श्रीहरि को प्रसादीरुप ऐसे कलाभगत के कुंडाल गाँव में १३ वें पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. २१-११-१२ से ता. २५-११-१२ तक पंचदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण का सुंदर आयोजन किया था । इस पाटोत्सव तथा पारायण के यजमान अ.नि. रामभाई जेसंगभाई तथा अ.नि. कपिलाबहन रामभाई कापडीया परिवार ह. गीरीशभाई तथा सुमनभाई थे । कथा के वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी बिराजे थे । प्रसंग के दूसरे दिन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा तीसरे दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा पूर्णाहुति पर प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे । बहनों को आशीर्वाद दिये । ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, शा. अभय स्वामी, माधव स्वामी, तथा स्वा. ब्रजभूषण स्वामी पधारे थे । प्रसंग में सुंदर प्रसाद की सेवा तथा व्यवस्था श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने की ।

(कोठारीश्री)

चांदरवेडा में पंचदिनात्मक ज्ञानयज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से ता. २५-११-१२ से ता. २९-११-१२ तक पंचदिनात्मक ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया गया ।

ज्ञानयज्ञ के यजमान प.भ. अंबालाल बकोरभाई पटेल परिवार ह. सुनिलभाईने लाभ लिया । कथा के वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) बिराजमान थे । दूसरे दिन प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । यजमान परिवार को दिव्य आशीर्वाद दिये । पूर्णाहुति पर स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, स.गु.स्वा. व्रजवल्लभदासजी, शा. अभय स्वामी, माधव स्वामी पधारे थे । पूर्णाहुति अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामीने की । सभा में महंत स्वामी, स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा शा.स्वा. गोपालजीवनदासजीने आशीर्वाद दिये ।

(शा.स्वा. ब्रजभूषणदासजी, नारायणघाट)

देलवाडा गाँव मे शाकोत्सव-पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से ता. ३०-११-१२ से ता. ४-१२-१२ तक देलवाडा गाँव में श्रीमद् भागवत पचान्ह पारायण तथा शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया ।

पारायण के मुख्य यजमान अ.सौ. डाहीबहन भगुभाई बापुदास पटेल परिवार थे । शाकोत्सव के मुख्य यजमान श्री त्रिमूर्ति डेरी फार्म तथा प्रिया डेरी फार्मवाले योगेशभाई नरेन्द्रभाई तथा लालसिंह रेवाजी गोहिल थे । पारायण के वक्ता पद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) बिराजमान थे । पारायण का मंगल दिप प्रागट्य स.गु.स्वा. हरिकेशवदासजी के वरद् हाथोंसे किया गया । प्रसंग में पोथीयात्रा, रात्रीय कार्यक्रम, रास गरबा, सत्संग कीर्तन-भक्ति तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव प्रसंग मनाया गया । सभी भक्तों को समस्त धर्मकुल के दर्शन का अवसर मिला । जिस में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री ता. १-१२-१२ को बहनो को दर्शन देने पधारे थे । पारायण पूर्णाहुति प.पू. लालजी महाराजश्रीने की । कथा की पूर्णाहुति करके सब्जी का बघार कर शाकोत्सव मनाया गया । स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, शा. कुंजविहारीदासजी, शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी, माधव स्वामी आदि संतगण पधारे थे ।

(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

मुबारकपुरा गाँव में पाटोत्सव-शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से मुबारक पुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर का दूसरा पाटोत्सव तथा भव्य शाकोत्सव मनाया गया ।

पाटोत्सव तथा शाकोत्सव के यजमान अ.नि. प.भ. नारायणभाई कानदास पटेल परिवार के श्री पछाभाई थे । प्रथम प्रातः ठाकुरजी का अभिषेक उसके बाद सुंदर अन्नकूट के साथ प.पू. लालजी महाराजश्रीने आरती की । भव्य शाकोत्सव का बघार भी प.पू. लालजी महाराजश्रीने किया ।

प्रासंगिक सभा में ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी, पुराणी स्वामी विश्वविहारीदासजी तथा

निलकंठ स्वामीने कथा-वार्ता तथा श्रीहरि की महिमा की बातें बताई। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, कोटेश्वर)

मेघाणीनगर में तुलसी ववविवाह का कार्यक्रम किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) के मार्दर्शन से मेघाणीनगर अंबर सोसायटी में भव्य तुलसी विवाह मनाया गया।

मेघाणीनगर विस्तार के सभी भक्तोंने मिलकर विवाह का आयोजन किया। जिस में वरपक्ष में प.भ. गोविंदभाई रणछोडदास पटेल परिवार तथा कन्या पक्ष के प.भ. मंगलभाई पटेल परिवारने लाभ लिया। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद देने पधारे थे। साथ में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी पधारे थे। शा. अभय स्वामी तथा चैतन्य स्वामीने कथा वार्ता का लाभ दिया।(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में तुलसी विवाह

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीके आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में भव्य तुलसी विवाह सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर समूह महापूजा का आयोजन किया गया। कन्या पक्ष के यजमान मंदिर के ट्रस्टी श्री प.भ. रतिभाई दयालजीभाई सोनी का परिवार था। तुलसी माता की भव्य शोभायात्रा यजमानश्री के निवास स्थान के मंदिर तक धूमधाम से निकाली गयी। वरपक्ष के यजमान प.भ. भालजा साहब मंडल के, प.भ. डॉ. हर्षदभाई कस्तुरचंद झिंझुवाडीया परिवार के वहाँ से ठाकुरजी की भव्य शोभायात्रा धूमधाम से निकाली थी। कन्या पक्ष के मामा के यजमान अ.नि. लवजीभाई भीमजीभाई पटेल परिवार के रणछोडभाई तथा ध.प. कंचनबहन थे। वरपक्ष के मामा के यजमान प.भ. समीरभाई रमणभाई (आंतर सुबा वाले) पटेल परिवार ने लाभ लिया था। बहनो के गुरु प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्रीने पधारकर यजमान परिवार की बहनो को आशीर्वाद दिये। विवाह के बाद देव स्वामी, मुकुंद स्वामी, मुक्तस्वरुप स्वामी (मूली) तथा प्रेमस्वरुप स्वामीने ठाकुरजी को भोग लगवाया। महिला मंडल की बहनो तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी।

(विशाल भगत)

थरा (बनासकांठा) गांव में प्रथम बार शाकोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से बनासकांठा में प्रथमबार कानावार परिवार की कुलदेवी बालवी माताजी के मंदिर थरा गांव में ता. १९-१२-१२ को श्री नरनारायणदेव के गादिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से सब्जी का बघार करके समग्र बनासकांठे के हरिभक्तो को शाकोत्सव का लाभ दिया।

इस प्रसंग में प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ अहमदाबाद से स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, जे.पी. स्वामी, पुराणी स्वामी, विश्वविहारीदासजी, शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी, निलकंठ स्वामी तथा शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी आदि संत तथा विरडीवाला से श्री नटुभाई कानाबार और हरिभक्त तथा धार्मिक राजकीय महानुभाव पधारे थे। प्रथम बार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भाभर गाँव में प.भ. रमेशभाई कानाबार के निवास पर पधारे थे। वहाँ उनका धूमधामसे स्वागत किया गया।

भाभर गाँव में वैशाख शुक्ल पक्ष-३ को श्रीनरनारायणदेव के ताबा का भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर का खात मुहूर्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से सम्पन्न होगा। (रमेशभाई कानाबार)

कल्याणपुरा (ता. कड़ी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा नारणपुरा मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी की प्रेरणा से कल्याणपुरा गाँव के प.भ. धीरुभाई सातुनिया के पिताश्री लाभुभाई तथा उनकी मातुश्री नर्मदाबाई की उपस्थिति में सुंदर श्रीस्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। प.भ. लाभुभाई के परिवार को आशीर्वाद दिये। भक्तों के लिए प्रसाद की सुंदर व्यवस्था श्री प्रतिककुमार धीरुभाईने की। (विशाल भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीतापुर का ९७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्रीके आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजीकी प्रेरणा से सीतापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का ९७ वां वार्षिक पाटोत्सव ता. १५-१२-१२ को धूमधाम से मनाया गया।

मंदिर में कीर्तन-भक्ति-उत्सव तथा ठाकुरजी को पालखी में बैठाकर ध्वजा, छत्र के साथ धून धाम से शोभायात्रा निकाली। इस प्रसंग में जेतलपुर से स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी संत-मंडल के साथ पधारे थे। संतो ने ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती की।

पाटोत्सव के यजमान जीवीबहन पटेल परिवार के सभ्यों का पू. स्वामीने आशीर्वाद के साथ सन्मान किया। प्रासंगिक सभा में संतोने कथा-वार्ता की। इस प्रसंग में जेतलपुर, जमीयतपुरा, महेसाणा, नारणपुरा तथा कलोल मंदिर के संत गण पधारे थे। समग्र संचालन शा. भक्तिनंदन स्वामीने किया था।

उत्तर गुजरात विस्तार कलोल में सत्संग शिबिर

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल उत्तर विभाग टीम-६ द्वारा युवा शिबिर का आयोजन KIRC कोलेज कलोल में किया गया। जिस में पोर-वावोल (४ गाँव), घमासणा (१२ गाँव), कटोसण (१६ गाँव) के युवा मित्रोने भाग लिया था। इस प्रसंग में हरिकृष्ण स्वामी (एप्रोच मंदिर) शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री), शा.

नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), शा. भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) तथा शा. राम स्वामी (कोटेश्वर गुरुकुल) आदि संतोने सुंदर ज्ञान के साथ मार्गदर्शन दिया । ७०० जितने युवा मित्रोने शिबिर में भाग लिया ।

इस आयोजन में नारायणघाट, डांगरवा, कलोल तथा मारुसणा के युवक मंडलने प्रेरणात्मक सेवा की । यजमान मुकेशभाई पटेल (पंचवटी) कलोल के थे । शिबिरार्थीओं को प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । प.पू. महाराजश्रीने शाकोत्सव तथा गुरुमंत्र देने के कार्यक्रम में उपस्थित रहे ।(श्री नरनारायणदेव युवक, मंडल)(नारायणघाट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव

श्री नरनारायणदेव ताबा के श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव में समस्त हरिभक्तोंने मिलकर नूतन वर्ष का भव्य अन्नकूट बनाया । धनुर्मास में भी प्रातः श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की जाती है । बहनों की सेवा मे प्रेरणात्मक है ।

(कोठारी हर्षदभाई पटेल)

हिंमतनगर श्री नरनारायणदेव महिला मंडल

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से तथा हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी तथा पूजारी स्वामी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर में देव प्रबोधीनी एकादशी को श्री नरनारायणदेव महिला मंडलने भगवान के सामने सब्जी तथा फूलो की शोभा की । गला, लौकी, ककड़ी, बैगन आदि सब्जी यांकी पाँच आरती के साथ रात में जागरण करके श्रीहरि का धून, भजन किया । प्रसंग के यजमान संगीताबहन तथा भावनबहन प्रजापती थे।

(कल्पना बहन)

आखज श्री स्वामिनारायण मंदिर का १२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से स.गु. महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी (महेसाणा) की प्रेरणा से आखज श्री स्वामिनारायण मंदिर का १२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ५-१२-१२ को विधिपूर्वक मनाया गया ।

ता. ४-१२-१२ को रात्रि में कीर्तन-भक्ति तथा कथावार्ता का आयोजन किया गया । शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) तथा गायकश्री जयेशभाई सोनीने कार्यक्रम किया । ता. ५-१२-१२ को ठाकुरजी का षोडशोपचार से महापूजा की । मुख्य यजमान सोनी नटवरलाल गंगाराम ह. सुपुत्र पंकजभाई तथा योगेशभाई (प्रीति ज्वेलर्स अहमदाबाद)ने लाभ लिया था । संतोने कथावार्ता में श्री नरनारायणदेव, आचार्य महाराजश्री के प्रति निष्ठा रखने का उपदेश दिया । समग्र आयोजन महेसाणा मंदिर के महंत स्वामीने किया । जिस में जेतलपुर, जमीयतपुरा, महेसाणा, नारणपुरा, सिध्धपुर, कलोल तथा अहमदाबाद से संतगण पधारे थे ।

(शा. भक्तिनंदनदास तथा कोठारीश्री आखज)

त्रिवेणी संगम प्रयागराज में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा गढपुर के सां.यो. मेघनाबहन की प्रेरणा से मानकुवा (कच्छ) के वर्तमान मोम्बासा के प.भ. मनजीभाई देवशीभाई गोरसीया के यजमान पद तीर्थराज प्रयाग क्षेत्रमें निर्माणाधिन नूतन मंदिर में ता. ८-१२-१२ से ता. १२-१२-१२ को श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण का आयोजन हुआ । प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री ने कथा का पांच दिन तक श्रवण किया । कथा के वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, विराजमान थे । सभा का संचालन शा. हरिप्रसाददासजीने (गढपुर) किया । समग्र आयोजन प्रयाग के महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजीने किया । इस प्रसंग पर अहमदाबाद के स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नाराणघाट महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, कोठारी जे.के. स्वामी, व्रजभूषण स्वामी तथा शा.स्वा. गोविंदप्रसाददासजी (गढपुर) आदि संतगण पधारे थे। रसोडाकी सेवा मुकुन्द स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी तथा हितेन भगतने की । कथा प्रसंग में अहमदाबाद, मोरबी, सुखपर तथा गढडा की सांख्ययोगी बहने उपस्थिति थी । समग्र व्यवस्था मे कोठारी पा. कमलेश भगत, अनिल भगत, सुंदर भगत, संसुल भगत, घनश्याम भगत, अंकित भगत, मौलिक भगत, कनैया भगतने सुंदर सेवा की थी ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज (भाईयो एवं बहनोके) का पाटोत्सव शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीकी प्रेरणा से श्री रमेशभाई एस. पटेल तथा धीरेनभाई पटेल इत्यादि यजमानो द्वारा विधिवत संपन्न हुआ था । श्री भरतभाईने महापूजा विधिकरवायी थी । ठाकुरजी की अन्नकूट, महाआरती के बाद विश्वस्वरुपदासजीने तथा सुखनंदनदासजी एवं शा. श्रीकृष्णदासजीने उद्बोधन किया था । अन्तमें सभी प्रसाद ग्रहण करके विदा हुए थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

इटादरा में वन विचरण कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से इटादरा गाँव में अमृतपर्व महोत्सव के निमित्त ता. २३-११-१२ से २५-११-१२ तक वनविचरण की कथा शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) के वक्ता पद पर सम्पन्न हई थी । इस प्रसंग पर टोडला से महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी, कल्याणपुरा से घनश्याम स्वामी इत्यादि संत पधारे हुए थे । इस प्रसंग पर पटेल भीखाभाई (बी.के पटेल)ने अपनी माता-पिता के अमृतपर्व के निमित्त समाजके करीब ४००० जितने हरिभक्तों को भोजन करवाया था । इस प्रसंग पर पटेल जयेशभाई कमलेशभाई तथा अरविंदभाई की सेवा प्रेरणारुप थी।

(गवैया चंद्रप्रकाश स्वामी, माणसा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के पू. स.गु. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू. स.गु.शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से मांडल श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २२-१२-१२ को हरिभक्तों ने साथ मिलकर सुंदर शाकोत्सव का आयोजन किया था । इस प्रसंग पर जेतलपुर धाम से श्याम स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी तथा भक्तिवल्लभ स्वामी पधारे थे ।

प्रातः महामंत्र धून के बाद संतोने सुन्दर कथा प्रवचन का लाभ दिया था। इस के बाद शाकोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था। इस प्रसंग में पाटडी, कालीयाणा, विरमगांव तथा गौरेया से सांख्ययोगी बहने पधारी थी। बहनो को कथा सुनने का लाभ भी मिला था।

(शा. स्वा. भक्तिनन्दनदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में भव्य शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (महंत अमदाबाद) की प्रेरणा से श्रीहरि के प्रसादी के धमासणा गाँव में ता. २५-१२-१२ को प.पू. लालजी महाराजश्री सर्व प्रथम बार इस गाँव में पधारकर भव्य शाकोत्सव अपने वरद् हाथों से किये थे । इस प्रसंग पर स्वा. सत्यसंकल्पदासजीने श्रीहरि के अनेको चमत्कारिक प्रसंगो के उल्लेख करते हुये पांच दिन तक पारायण किये थे। शाकोत्सव में गाँव के सभी हरिभक्त भन्टा, मांखन, बाजरी, छाश, मरचा, गुड इत्यादि की सेवा किये थे । गाँव की महिलाओं ने भी शारीरिक सेवा का कार्य की थी। इस प्रसंग पर संतोमें ब्र. राजेश्वरानंदजी, स.गु. जे.पी. स्वामी, महंत पूर्णप्रकाश स्वामी (धोलका) महंत पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) बालू स्वामी (मूली) विश्वविहारी स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामी, राम स्वामी (आदरज) इत्यादि संत शाकोत्सव में लाभ देकर अपनी अमृतवाणी का भी लाभ दिये थे। इस उत्सव के मार्गदर्शक तथा व्यवस्थापक स.गु. जे.पी. स्वामी स.गु. पी.पी. स्वामी और विश्वविहारीदासजी थे। (पोपटभाई कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से बोपल में श्री नरनारायणदेव के हरि मंदिर जो रतिभाई खीमजीभाई पटेलने (अमदावाद मंदिर के ट्रस्टी (अपनी जगह में निर्मित करके श्री नरनारायणदेव को समर्पित किया था। जिसकी मूर्ति प्रतिष्ठा १५-५-२००५ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथो सम्पन्न हुई थी। जिस मंदिर में सम्प्रदाय के सभी उत्सव धूमधाम से मनाये जाते है। शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा को. अमृतभाई पटेल द्वारा ता. २५-११-१२ को सभा के साथ स्नेह मिलन का आयोजन किया गया था । जिस में बड़ी संख्या में हरिभक्त एकत्रित हुये थे । कथा-प्रवचन-कीर्तन का सुन्दर वातावरण बनाया । प.भ. खीमजीभाई भगवानदास पटले तथा उनके सुपुत्र श्री गोविंदभाई तथा श्री रतिभाई यजमान पद का लाभ लेकर सभी की प्रसन्नता प्राप्त किये थे। सभी आगन्तुकों को यजमान की तरफ से भोजन की व्यवस्था की गयी थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बोपल के मंदिर में प्रति रविवार को सायंकाल सभा का आयोजन किया जाता है। बहुत सारे भक्त यजमान बनने का लाभ प्राप्त करते हैं। पूरे वर्ष के यजमान बन चुके हैं। प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से बहनो के सत्संग में प्रति एकादशी को दोपहर में महिला मंडल द्वारा कथा-सत्संग कीर्तन-भक्ति इत्यादि किया जाता है। विरमगाँव की सां.यो. गीताबा भी कथा-भक्ति का पोषण देती रहती है। भावि पीढी के लिये प.पू. लालजी महाराजश्री की देखरेख में प्रति रविवार को बाल सभा का आयोजन किया जाता है । जिस में बालक-बालिकाओं द्वारा प्रवृत्ति की जाती है और संस्कार सिंचन हो रहा है। धनुर्मास में हजारों हरिभक्त धुन में प्रातः काल पधारते हैं और जीवन को कृतकृत बनाते हैं। (प्रवीणभाई उपाध्याय)

गांधीनगर सेक्टर-२३ के अपने मंदिर में सत्संग आराधना पर्व सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से गांधीनगर सेक्टर-२३ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २६-१२-१२ से ३०-१२-१२ तक शा.स्वा. हरिकेशवदासजी को ५५ वर्ष संत दीक्षा को हो गया इस निमित्ते सत्संग आराधना पर्व का विशिष्ट आयोजन किया गया था।

इस प्रसंग पर ''दिव्य दर्शनम्'' प्रदर्शन का आयोजन किया गया था। इस प्रदर्शन में श्रीहरि के चार मास तक नीलकंठ वर्णी के रुप में तपश्चर्या करने का तीर्थोत्तमक्षेत्र पुलहाश्रम का तदुरुप वर्णन किया गया था। जिसका हजारो भक्तोंने दर्शन करने का लाभ लिया था।

इस महोत्सव में ता. २७-१२-१२ गुरुवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। प्रथम मंदिर में ठाकुरजी का दर्शन किये, बाद में ''दिव्यदर्शनम्'' प्रदर्शन में पधारे । प्रदर्शन देखकर अन्तर हृदय से प्रसन्नता व्यक्त किये थे । इस के बाद पूज्यपाद महाराज श्री सभा में पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर स्व आसन पर विराजमान हुये थे । बाद में संत-भक्त मिलकर पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती किये थे।

प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों ''श्रीहरि लीला वार्ता विवेक'' पुस्तक का विमोचन किया गया था। पू. शा.स्वा. को ५५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प.पू. महाराजश्रीने प्रसन्नता का हार पहनाकर अभिवादन किया था। सभा में पधारे हुये महानुभावों तथा संतो के प्रवचन के बाद पू. महाराजश्रीने विशाल सभा को हार्दिक आशीर्वाद देते हुए कहा कि शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी स्वयं नहीं अकितु भगवान की पहचान कराने वाले संत हैं।

एकवात और कहे-''आप का हमारा संबन्धक्या है?'' हमारे और आपके बाद स्वामिनारायण भगवान है, इसलिये आध्यात्मिक सम्बन्धहै। इसलिये हमलोग एक कुटुम्ब के हैं? इसके अलांवा इस सत्संग आराधना पर्व में महिला-पुरुष के लिये भक्ति आराधना के नाना विधकार्यक्रम तथा ठाकुरजी का महाभिषेक, तुलाविधि, समूह आरती, युवानो द्वारा रास, अधोगति से सद्गति (नाटक) श्रीहरियाग, महाविष्णुयाग, विना मूल्ये के नेत्र चिकित्सा यज्ञ, कीर्तन अन्त्याक्षरी इत्यादि दिव्य प्रेरणादायी आयोजन किये गयें है। जिसका लाभ हजारो भक्तजनने लिये हैं। हम सभी को साधुवाद देते हैं। इस तरह के पू. महाराजश्री के आशीर्वाद के जय जयकार के साथ महोत्सव पूर्ण हुआ था। (शा.स्वा. हरिप्रियदास)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर का ७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं यहाँ के महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से अ.नि. प.भ. मणीयार लक्ष्मीचंदभाई

नारणभाई परिवार के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का ७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर ता. २४-११-१२ से ता. ३०-११-१२ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन का सप्ताह पारायण शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजीने किया था । इस प्रसंग पर तुलसी विवाह, रामप्रतापभाई का विवाह, श्रीहरियाग, अन्नकूट, महाभिषेक, तथा बालको द्वारा सास्कृतिक प्रोग्राम किया गया था । ता. २७-११-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तथा सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बाद में नूतन आफिस का उद्घाटन किये थे । बहनो को दर्शन आशीरव्दा का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. बड़े गादीवालाजी पधारी थी । इस प्रसंग पर अनेकों स्थानो से सां.यो. बहने भी पधारी थी। सभा संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने किया था। को.स्वा. कृष्णवल्लभदासजीके मार्दर्शन में श्री नरनाराणदेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा का कार्य किया था । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

कविसम्राट स.गु. देवानंद स्वामी के बलोल (भाल) मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजीकी प्रेरणा से श्री राधाकृष्णदेव देश के एवं संप्रदाय के महान कवि देवानंद स्वामी के जन्म स्थान बलोल के श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७ वाँ वार्षिकोत्सव विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ । प्रात:९ बजे प.पू. बड़े महाराजश्री संत पार्षदो के साथ पधारे थे । उस समय संत तथा भक्तों ने धूमधाम से स्वागत किया था । सर्व प्रथम पुरुषों के मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार पूजन-आरती करके सभा में विराजमान हुये थे ।

सभा में शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर)ने सुंदर कथा का रसपान कराया । इस पाटोत्सव के यजमान राजपूत समाज के निवृत्त कर्मचारी समूह में प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारी थी । इस प्रासंगिक सभा में मूली के महंत स्वामी के प्रतिनिधिबालस्वरुपदासजी तथा भूतपूर्व महंत नारायणप्रसादासजी ने प्रासंगिक प्रवचन किया था । सभा में श्याम स्वामी, जेतलपुर के महंत स्वामी के.पी. स्वामी, योगी स्वामी, भानु स्वामी, नटु स्वामी, मुक्तस्वरुप स्वामी, मूली के को. ब्रज स्वामी तथा राम स्वामी इत्यादि संत पधारे थे । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को श्री राधाकृष्णदेव का वफादार रहने पर बल दिया था । सभी को हार्दिक आशीर्वाद भी दिया था । बाद में अन्नकूट की आरती उतारक भोजन का प्रसाद लेकर तालाब के पास चरणारविन्द का पूजन करके स्वस्थान पधारे थे ।

(खटाणा जेसंगभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगधा (बहनों का धांचीवाड)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीश्री के आशीर्वाद से बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सां.यो. कंचनबा, हीराबा, तथा भगवतीबा ने वचनामृत जयन्ती के निमित्त वचनामृत का पारायण करके श्री नरनारायणदेव देश की समस्त बहनों को प्रभु में दृढता का भाव आवे ऐसा ज्ञानप्रदान किया था । (अनिलभाई दूधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अरवीयाणा में कथा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में भक्ति स्वामी ने प्रभु के माहात्म्य को समझाकर श्री नरनारायणदेव गादी के प्रति वफादार रहने पर खूब बल दिया था । इसी में सभी का कल्याण है, ऐसी सुन्दर सुन्दर कथा करके लोगो को भगवत् परायण किया था ।

(अनिलभाई दूधरेजिया)

मूली के संतो द्वारा गाँवो में कथा प्रवचन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. विज्ञानदासजी के शिष्य धर्मवल्लभदासजी तथा श्रीजीस्वरुपदासजी इत्यादि संत मूली देश के घनश्यामनगर, घार, प्रतापगढ, मयूरनगर, मच्छु, वेजलपुर इत्यादि गाँवो में भगवान श्रीहरि के माहात्म्य को तथा श्रीहरि द्वारा स्वस्थान पर प्रतिष्ठित आचार्यश्री के माहात्म्य को कथा के माध्यय से समझाया था । (रमेशभाई, घनश्यामनगर)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर आटलान्टा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से आटलान्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर में कालीचौदश को श्री हनुमानजी का पूजन, दीपावली को लक्ष्मीपूजन, सरस्वतीपूजन, तथा नूतन वर्ष को ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था । तुलसी विवाह भी भव्यरीति से सम्पन्न हुआ था । यहाँ के शा.स्वा. सत्यस्वरुपदासजी के तथा अजयप्रकाशदासजी के, चेरमेन दक्षेशभाई तथा राजूभाई के मार्गदर्शन में बहुत सारे हरिभक्त उत्सव में भाग लिये थे । बहनोंने सुंदर कलात्मक-सजावट का कार्य किया था । रंगबिरंगी बत्ती जलाकर सजाया गया था । तुलसी विवाह में विवाह के गीत गाये गये थे । मंदिर की सभा में १२५ जितने भक्तोने साप्ताहिक कार्यक्रम करने के लिये स्वीकृति प्रदान की थी । अन्त में सभी भगवान को प्रसाद लेकर स्वस्थान गमन किये थे ।

(प्रति. दक्षेश पटेल आटलान्टा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं शांतिप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ के शिकागो मंदिर में दीपोत्सव तथा अन्नकूट का उत्सव बड़ी भव्यता से मनाया गया था ।

२४ नवम्बर को तुलसी विवाह के प्रसंग पर वरपक्ष के यजमान डॉ. हेतलभाई बाबूभाई पटेल परिवार तथा श्रीहर्षभाई छगनभाई पटेल परिवार, कन्या पक्ष के यजमानश्री भानुभाई गोविंदभाई पटेल परिवार ने लाभ लिया था । श्री दिनेशभाई ने सुन्दर विवाह की विधिकरवायी थी । यहाँ पर पूजा-सेवा करने वाले नीलकंठ स्वामी की खूब प्रसंशा की गयी थी । (वसंतभाई त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वोशिंग्टन डी.सी.

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से नवम्बर महीने में ३, १०, १२, १३, १४, १७, २४ तथा २८ तारीख को तथा १ डिसम्बर को काली चौदश दीपावली, नूतन वर्ष, एकादशी तथा देव

दीवाली को सुंदर सत्संग सभा का आयोजन हुआ था। कालोनिया से डी.के. स्वामीने एक सप्ताह पर्यन्त कथा का लाभ दिया था। कालीचौदश को श्री हनुमानजी का पूजन नूतन वर्ष को अन्नकूट भजन-कीर्तन का कार्यक्रम किया गया था। जिस में ३०० जितने हरिभक्त भाग लिये थे। १ दिसम्बर को भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था।

जिस में सुन्दर सरघस निकाला गया था। इस बाद सभी के भौजन की व्यवस्था की गयी थी। तुलसी विवाह में करीब २०० जितने लोगोने भाग लिये थे। (कनुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में दीपावली अन्नकूट

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से दीपावली का उत्सव, काली चौदश को हनुमानजी का पूजन, इत्यादि कार्यक्रम रखे गये थे। भगवान का सुवर्णमय सिंहासन दीपमाला से अलंकृत किया गया था। नूतन वर्ष के शुभ दिन प्रातः मंगला आरती, श्रृंगार आरती, राजभोग आरती, संध्या आरती, शयन आरती तथा दोपहर में अन्नकूट की आरती का दर्शन करके भक्तजन आनंद विभोर हो गये। नूतन वर्ष को महंत स्वामीने सर्वोपरि महाप्रभु का दिव्य महात्म्य समझाया था।

दीपावली पर्व का उत्सव रविवार की रात्रि में युवा हरिभक्तों द्वारा नंद संतो के कीर्तन से किया गया था। जिस में योगेशभाई रमेशभाई, मशरुवाला, प्रकाशभाई, मनोजभाई तथा उनके पुत्र श्यामने सुंदर प्रोग्राम करके सभी को आनंदित किया था। अन्त में शास्त्री स्वामीने सभी कलाकारों का सन्मान किया था। सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे।

कार्तिक शुक्ल-११ को भव्य तुलसी विवाह सम्पन्न हुआ। विवाह के अवसर पर मंडप को सुंदर सजाया गया था। माताजी को तथा भगवान को अलंकृत किया गया था। सुंदर विवाह के गीत गाये गये थे। वरपक्ष तथा कन्यापक्ष के यजमान बनकर भक्तोंने सुंदर लाभ लिया था। बहनों की सेवा सराहनीय थी। महंत स्वामीने तुलसी विवाह का महत्व समझाया था। अन्य सभी प्रसंग समयानुसार होते रहते हैं। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के ओकलेन्ड मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष दीपावली का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

जिस में कालीचौदश को हनुमत्पूजन, दीपावली को लक्ष्मी पूजन, सरस्वती पूजन इत्यादि कार्यक्रम हुये थे।

नूतन वर्ष को गोवर्धन पूजा, अन्नकूट की आरती, सायंकाल सत्संग सभा, कीर्तन-भजन संपन्न हुआ था। शास्त्रीजी ने जेतलपुर के जीवण भगत के रोटी की कथा विस्तार पूर्वक सुनाई थी। बाद में सभा में लीग, स्क्रीन पर प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीवर्चन सुनाया गया था। डॉ. कांतिभाई पटेलने नूतन वर्ष के निमित्त अपने अन्तर की भावना के साथ श्रीहरि तथा धर्मकुल की आज्ञा में रहने पर खूब बल दिया था। अन्नकूट महोत्सव के यजमान श्री जैमिनभाई पटेल तथा मंदिर के कोठारी श्री अतुलभाई पटेलने सुन्दर लाभ दिया था। भाईयों तथा बहनों की सेवा सराहनीय थी। गुजराती तथा हिन्दी के कलास वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया गया था। (बिपिन ठक्कर)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

महेसाणा : श्री नरनारायणदेव के अनन्य आश्रित, धर्मकुल के कृपापात्र श्री नरनारायणदेव देश स्कीम कमिटी के सदस्य परम भगवदीय श्री जी.के. पटेल के पू. पिताजी प.भ. श्री काशीरामदास करशनदास पटेल सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण का अखंड स्मरण करते हुये ता. २७-११-२०१२ को अक्षरनिवासी हुये हैं। दंढाव्य देश में भगवान के दृढ निष्ठावान की एक कमी हुई है। श्रीहरि उनके परिवार को आत्मबल प्रदान करें ऐसी प्रार्थना।

अहमदाबाद : मूल कुंडाल (ता. कडी) गाँव के कला भगत के वंशज तथा बड़े महाराजश्री एवं धर्मकुल के कृपापात्र तथा श्री नरनारायणदेव के निष्ठावाले युवा हरिभक्त प.भ. दीपकभाई नगीनदास पटेल ता. ३०-११-१२ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं। श्रीहरि उनके परिवार को धैर्य प्रदान करें।

अहमदाबाद (बापूनगर) : प.भ. बटुकभाई जादवभाई बवाडिया उम्र (४६ वर्ष) ता. २९-११-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : प.भ. मणीलाल टी. पटेल (सोजावाला) के सुपुत्र प.भ. दिनेशकुमार की धर्मपत्नी मीनाबहन (उ. ५० वर्ष) ता. ४-१२-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

दहेगाँव : प.भ. नटवरलाल ईश्वरभाई पटेल (अमीन) ता. ३१-१०-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

कंजरीकंपा : प.भ. डाह्याभाई पूंजाभाई पटेल कोठारीश्री ता. २७-१२-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।